ब्रज भारती

ब्रज भारती प्रवेशिका

पाठ्यक्रम एवं सामग्री निर्माण विभाग
राज्य संदर्भ केन्द्र
साक्षरता निकेतन, लखनऊ-226 005

ब्रज भारती प्रवेशिका

रचना मण्डल

- डॉ० निरंजन कुमार सिंह
- डॉ० श्यामलाकान्त वर्मा
- डॉ० सरोजिनी कुलश्रेष्ठ
- श्री श्रीनाथ मिश्र
- श्री लायक राम 'मानव'
- श्री श्याम लाल
- श्री विश्वनाथ सिंह
- श्री लीलाधर शर्मा 'पर्वतीय'
- डॉ० त्रिलोकी नाथ ब्रजबाल
- डॉ० नारायण दत्त शर्मा
- श्री सत्यदेव आजाद
- श्री यमुना प्रसाद त्रिपाठी 'धार'
- श्री गणेश शंकर चौधरी

आवरण एवं कला पक्ष

- के० जी० सिंह
- डी० वी० दीक्षित
- आनन्द सिंह

प्रकाशक

राज्य संदर्भ केन्द्र
साक्षरता निकेतन,
लखनऊ— 226 005 (उ० प्र०)

मुद्रक

प्रकाश पैकेजर्स,
257, गोलागंज, लखनऊ

जनवरी, 1989

इस प्रवेशिका के सम्बन्ध में

राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु साक्षरता निकेतन ने उत्तर प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों के लिए उनके परिवेश से सम्बन्धित साक्षरता की मानक सामग्री का निर्माण किया है। यह 'ब्रज भारती' प्रवेशिका इसी क्रम की अगली कड़ी है।

राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम की विषय-वस्तु एवं मानकों की अपेक्षा राष्ट्रीय साक्षरता मिशन में कुछ नए आयाम जोड़े गये हैं। उनमें एक महत्त्वपूर्ण और विचारणीय मानक है— विभिन्न क्षेत्रों की स्थानीय बोलियों में पठन-पाठन सामग्री का निर्माण करना। इस विषय में विद्वानों, विशेषज्ञों और प्रौढ़ शिक्षा शास्त्रियों के बीच विस्तृत विचार-विनिमय हुआ। अनेक भाषा शास्त्री इस बात पर विशेष बल देते हैं कि पठन-पाठन सामग्री यदि स्थानीय बोली में निर्मित की जाय तो पढ़ने वाले जल्दी सीखेंगे और अपने परिवेश से सम्बन्धित होने के कारण पढ़ने-लिखने में रुचि लेंगे।

कुछ लोगों ने यह जिज्ञासा प्रकट की कि जब शिक्षार्थी को मानक भाषा में ही कार्यात्मक दक्षता प्राप्त करनी है तो स्थानीय बोली के माध्यम से भाषा का ज्ञान उन्हें क्यों न कराया जाय। इस सम्बन्ध में साक्षरता निकेतन ने पहले कुछ प्रयोग किये थे। उन प्रयोगों के आधार पर यह स्थिति सामने आई कि स्थानीय बोली में भाषा जल्दी सीखी जा सकती है, क्योंकि निरक्षर प्रौढ़ उसमें मौखिक अभिव्यक्ति की क्षमता विकसित कर चुके हैं। उसका प्रयोग वह दैनिक जीवन में करते हैं, इसलिए उन्हें इसके माध्यम से मानक भाषा की दक्षता प्राप्त करने में सरलता हो सकती है। निकेतन में मिशन द्वारा निर्धारित मानकों पर प्रवेशिका निर्माण-सम्बन्धी कई गोष्ठियाँ आयोजित की गईं। विस्तृत विचार-विनिमय के उपरान्त यह निष्कर्ष निकला कि वर्णमाला का ज्ञान एवं उपयोग स्थानीय बोली की विषय-वस्तु के परिप्रेक्ष्य में कराया जाय, तदुपरान्त भाषा और गणित की कार्यात्मक दक्षता मानक भाषा में धीरे-धीरे पैदा की जाय। शिक्षा शास्त्रियों ने इस प्रवेशिका में स्थानीय बोली और मानक भाषा का अनुपात तीन चौथाई और एक चौथाई रखा है।

'ब्रज भारती' प्रवेशिका की कुछ विशेषताएँ हैं, (अ) यह ब्रज क्षेत्र के जीवन पर आधारित है तथा वहाँ के प्रौढ़ों की रुचियों, आवश्यकताओं और समस्याओं को सम्मुख रखकर लिखी गई है। ब्रज भाषा के साथ-साथ इसकी विषय-वस्तु ब्रज की संस्कृति और वहाँ के आर्थिक, सामाजिक, साँस्कृतिक और ऐतिहासिक परिवेश पर आधारित है। (ब) ब्रज भाषा हिन्दी साहित्य और संस्कृति की प्रमुख भाषा रही

है, विशेषकर पद्य साहित्य में। गद्य साहित्य का प्रचार-प्रसार अथवा उसका उपयोग उतना नहीं हुआ। यह प्रवेशिका ब्रज भाषा के गद्य स्वरूप को प्रस्तुत करने में समर्थ होगी तथा साक्षरता के प्रचार-प्रसार का माध्यम बनेगी। (स) ब्रज क्षेत्र में इस भाषा के कई रूप हैं। बोलने, समझने और चर्चा करने आदि में क्षेत्र के अनुसार क्रियाओं के अनेक रूप मिलते हैं, किन्तु भाषा शास्त्रियों ने जिस रूप को प्रौढ़ के लिए समीचीन समझा, वह इस प्रवेशिका में अपनाया गया है। (द) यह प्रवेशिका ब्रज क्षेत्र में ही निर्मित की गई है। इसके निर्माण में ब्रज भाषा के विशेषज्ञों, विद्वानों, वहाँ के साहित्य मर्मज्ञों तथा प्रौढ़ शिक्षा के कार्यकर्ताओं ने सहयोग दिया। ब्रज भाषा और संस्कृति के विकास तथा उत्थान में संलग्न कुछ शैक्षिक संस्थाओं तथा साधकों ने भी इस प्रवेशिका के निर्माण में अपना बौद्धिक और वैचारिक सहयोग प्रदान किया।

प्रवेशिका के निर्माण के लिए हम श्री ईश्वर शरण गौड़, प्रौढ़ शिक्षा निदेशक, उत्तर प्रदेश के अत्यन्त आभारी हैं, जिन्होंने ब्रज क्षेत्र में उपस्थित होकर हमें बहुमूल्य परामर्श दिया। ब्रज क्षेत्र के ही निवासी डॉ० त्रिलोकी नाथ ब्रजबाल, डॉ० सरोजिनी कुलश्रेष्ठ, डॉ० नारायण दत्त शर्मा, श्री श्रीनाथ मिश्र एवं श्री सत्यदेव आजाद आदि विद्वानों के हम विशेष आभारी हैं, जिन्होंने इस प्रवेशिका के निर्माण में अपना योगदान दिया। पठन-पाठन सामग्री निर्माण विभाग को जो विद्वान प्रत्येक स्तर पर सहयोग देते रहे हैं, उनमें डॉ० एन० के० सिंह, श्री लीलाधर शर्मा 'पर्वतीय' एवं डॉ० श्यामलाकान्त वर्मा प्रमुख हैं। हम इनके विशेष आभारी हैं। पठन-पाठन सामग्री निर्माण विभाग के सर्वश्री वी० एन० सिंह, यमुना प्रसाद त्रिपाठी 'धार', श्याम लाल एवं लायक राम 'मानव' तथा स्क्रीन प्रिंटिंग इकाई के सर्वश्री के० जी० सिंह, डी० वी० दीक्षित एवं आनन्द सिंह ने अथक परिश्रम करके इसका रूप उजागर किया।

आशा है कि ब्रज क्षेत्र में राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के उद्देश्यों की पूर्ति में यह प्रवेशिका महत्त्वपूर्ण योगदान देगी।

गणेश शंकर चौधरी

दिनांक : जनवरी २३, १९८९

निदेशक

अनुदेसक भाइयन ते

जा ब्रज भारती उत्तर प्रदेश के ब्रज छेत्रन कूँ ध्यान में रखि कैं लिखी गई ए। जा छेत्र कौ जनजीवन, खेती, धन्धौ, लोगन की रुचीन, जरूरतें, समस्यान, मनोरंजन, बोली-भासा औरु संस्कृति आदि सबन कूँ समावेस जरूरत के अनुसार जा प्रवेसिका में कियौ गयो ए। जे प्रवेसिका चर्चा जैसो तरीका पै आधारित ए, जामे वर्णमाला कौ क्रमऊ नाँय।

जो प्रौढ़ पढ़े-लिखे नाँय, बाकूँ सबतें पहले अक्षर ज्ञान करायो जायगौ। जे अक्षर ज्ञान जा क्षेत्र की परिचित सब्दावली पै आधारित कियो गयो ए। प्रवेसिका में सब्दावली कूँ चुनते समै जा बात कौ बिसेस ध्यान रख्यो गयौ ए कि जे सब्द (क) वाके जीवन केउ संग होय, (ख) वाके जीवन में आयवे वारे खेती-बारी, काम-धन्धौ, सिल्प, लोक कला, संगीत और संस्कृति आदीन तेऊ सम्बन्धित होय, (ग) आधुनिक जीवन में विकास की नई दिसायें आय सकैं, जैसे खेतीन को नयौ साधन (ट्रैक्टर, खाद, बिजली कौ कुँआ, थ्रेसर), ऊर्जा (गोबर गैस, सौर कौ चूल्हा, पवनचक्की), परिवार कल्याण (जच्चा-बच्चा, पोसण, टीकौ) और विकास योजनाएँ। या सब्दान के आधार पै अक्षर ज्ञान करायवे कौ हमारौ मूल उद्देश्य जे ए कि—

1- प्रौढ़ आज की सामाजिक समस्यान तथा विकास के नये साधनन कूँ जानि सकैं।

2- बिन के काम-धन्धौं की कुसलताऊ बढ़ै। बास्तव में साक्षरता कार्यक्रम मेंऊ तीनौ बातन कूँ लियो गयो ए— अक्षर ज्ञान, सामाजिक चेतना और व्यावसायिक दक्षता।

प्रौढ़न के जा ज्ञान और अनुभव कौ सही उपयोग तबई हे सकै, जब बो अपने आप अपनौ जीवन और सामाजिक निर्माण के ताईं आगे बढ़ैं। प्रौढ़न की सक्रियता और सहयोग जा प्रवेसिका के उचित उपयोग पै निर्भर करै। जा दृष्टिन तें निम्नलिखित सिक्षण सामग्री तैयार कीनी ए—

1. प्रवेसिका, 2. सिक्षण चार्ट, 3. अभ्यास पुस्तिका, 4. सिक्षक निर्देशिका।

जा प्रवेसिका में जो पाठ दिये भये एँ, बाके सिक्षण में निम्नांकित क्रम कौ पालन कियौ भयो ए—

1. सिक्षण चार्ट तथा चित्र

जे प्रवेसिका वर्णमाला पद्धति पै नाँय, सब्दन की पद्धति पै ए। हरेक पाठ में ऐसे सब्दान कौ आधार बनायौ गयौ ए, जातें प्रौढ़न के जीवन, रोटी-रोजी, काम-धन्धौ, कला और संस्कृति कूँ जान सकैं। जे बी ध्यान रख्यौ गयौ ए कि बाकौ चित्रऊ बन सकै। जाकूँ हम मूल सब्द कै सकै। जा मूल सब्द पै आधारित सिक्षण चार्ट और पाठन में दिये भये चित्रन ते बढ़ायबो सुरू करनौ ए।

जेऊ ध्यान रखन्यो ए कै वर्ण या अक्षर ज्ञान के पहले मूल सब्द और बाके चित्रन के आधार पै पढ़बे वारेन के संग बाकौ जीवन, काम-काज और सोच-विचार पैऊ चर्चा की जाय सकै। जा चर्चा तेई वामै पढ़िबे-लिखिबे के काजै रुचि पैदा होयगी। जाके ताईं जरूरी ए कि—

- क. सिक्षण चार्टन कूँ ऐसौ स्थान पै लटकायौ जाय, जाकूँ सबई प्रौढ़ पढ़िबे बारे देखि सकैं।
- ख. जिन पाठन कूँ फढ़ायो जान्यो ए, पढ़िबै बारिन की किताबन में निकलवाय लैं। सिक्षण चार्ट प्रवेसिका कौई भाग ए। जामै वाई चित्रन कूँ बड़े आकार में छापौ गयौ ए, जो प्रवेसिका में दिये भये एँ।

2. चर्चा

सिक्षण चार्ट और चित्रन पै चर्चा करते समै आपकूँ जा बात कौ ध्यान रखन्यों ए कि चर्चा में पढ़िबे-लिखिबे बारे प्रौढ़न की खूब भागीदारी है सकै। अर्थात् बे अपनी बातन कूँ खुलि कै बताय सकैं। अनुदेसक की सफलता जा बात मैं ए कि बो खुद थोड़ौ बतराय और प्रौढ़न कूँ जादै से जादै बुलवायै। साथई जे बी ध्यान रख्यो जाए कि प्रौढ़ जो बात कहमैं, बामैं अगर कछु जोड़िबे की जरूरत ए, तो बोऊ अपनी ओर तै जोड़ि दै। प्रौढ़ यदि बिसै तै बाहर कीऊ बात करै तोऊ सावधानी तें बाई बिसै पै लै आमैं। सावधान रहैं कि आपकी कोई बात बाकूँ बुरी न लगै और बो चर्चा तें सही निर्णय पै पहुँच सकैं। संक्षेप मेंऊ—

- क. चित्रन में जो कछु दिखाई दे, बाई पै प्रश्न करैं।
- ख. चित्रन में जिन चीजन कूँ दिखायों गयो ए बामैं तैं कछु चित्रन कूँ प्रौढ़ पहिचानते हुँगे और कछुन कौ नाँय जानते हुँगे। जाकूँ बो पहिचानैं, बाके बारे मेंऊ बिनतै प्रश्न करैं और जाकूँ नाँय पहिचानैं, बाके बारे में बिनकूँ जानकारी करामैं।
- ग. जे जरूरी ए कि चर्चा में सबई प्रौढ़न कूँ बोलिबे कौ अबसर दियो जाय। सबई कूँ अपनी बात कहिबै कौ प्रोत्साहित कियो जाय। आपकी सफलता की एक बड़ी कसौटी जे ए कि प्रौढ़न की चुप्पी टूटि जाय और बे सबई के संग मिलि कै चर्चा में भाग लैं।
- घ. चर्चा करते समै आप बाई बोली में प्रश्न करैं, जाकूँ प्रौढ़ इस्तेमाल करैं। जाते बे निःसंकोच हैके आपके प्रश्नान कौ उत्तर दे सकिंगे।
- ङ. चर्चा में पढ़िबे-लिखिबे बारेन कूँ पाठ की पूरी जानकारी दें। जातें बे बिषय कूँ अच्छी तरियाँ जानि जानिंगे।

चित्रन कूँ आधार मानि कै जब चर्चा पूरी है जाये, तबई बिन्ने पढ़ायबो आरम्भ करनौ चइए।

3. साक्षरता सिक्षण

साक्षरता सिक्षण में तीन बातन कौ समावेश होय करै– पढ़िबो, लिखिबो और आरम्भिक गणित कौ ज्ञान करायबौ। प्रवेसिका तें बर्ण औरु मात्रान कौ ज्ञान करायो गयौ ए। जा ज्ञान के बादऊ प्रौढ़ सब्दन और बाक्यन कूँ पढ़नौ सीख सकिंगे। अभ्यास पुस्तिका तें बु लिखिबे कूँ प्रयास करिंगे। जाइतें आरम्भिक गणित कोऊ ज्ञान प्राप्त कियो जाय सकै।

साक्षरता सिक्षण देते भये अनुदेसक निम्नलिखित क्रम कूँ अपनायिंगे–

क. चित्र

ख. मूल सब्द

ग. मूल सब्द में आये भये बर्ण और मात्रान

घ. जा बर्णन और मात्रान तें बने भये सब्द

ङ. जा सब्दान के आधार पै पढ़िबे के ताईं बने भये बाक्य और पठन अभ्यास।

अनुदेसक फिर तें पाठन में दिये भये चित्रन की ओर इसारौ करिंगे। प्रौढ़न कूँ बतामैं कि बु जौन चीज कौ चित्र ए, बाकौ नाम नीचे लिख्यों ए। मूल सब्द के नीचे उँगरिया रखि कै बतामैं और प्रौढ़न ते कहमैं कि बु प्रवेसिका में बा सब्द कूँ देखैं।

4. पढ़िबो सिखायबो

क. बा सब्द कूँ स्यामपट पै लिक्खैं।

ख. बा सब्द कौ सुद्ध उच्चारण करैं और प्रौढ़न तेऊ करामैं।

ग. उच्चारण करते बखत सब्द में आई भई आवाजन कौ अलग-अलग उच्चारण करैं और प्रौढ़न तेऊ करामैं।

घ. प्रत्येक आवाज तैं सम्बन्धित बर्ण कीऊ पहचान करामैं और बाकौ लिखित रूप बतामैं।

ङ. अगर मूल सब्द में कोऊ मात्रा ए तो मात्रान कूँई लिक्खैं, बातें सम्बन्धित स्वर कूँ नाँय लिक्खैं। जैसे– रास लीला सब्द में र और ल, बर्णानि पै 'ा' और 'ी' की मात्रान कूँ लगायो गयो ए। जाते जे मात्रान 'ा' और 'ी' लिक्खैं और पढ़ामैं। आ और ई स्वरान की चर्चा अबई नाँय करैं।

च. जब नयौ पाठ पढ़ामैं तौ बामै आये भये नए-नए बर्णानि और मात्रान कूँई स्यामपट पै लिक्खैं, जो पहले सिखा दये हैं, बाकूँ नाँय बतामैं।

छ. सीखे भए बर्णानि और मात्रान तें बनिने बारे अन्यऊ सब्दान कूँ स्यामपट पै लिक्खैं और पढ़िबो सिखामैं।

ज. किताब में प्रत्येक बर्ण या मात्रा के सामने जो सब्द लिखे भए हैं, बाईमेंतें बा बर्णानि के नीचे उँगरिया रखि कै प्रौढ़न कूँ पहिचान करामैं।

झ. जब प्रौढ़ जा बर्णानि और मात्रान तें अच्छी तरियाँ परिचित है जाँगे, तब बिनतै पाठ में दिए भए पूरे-पूरे सब्दान और बाक्यन कूँ भी पढ़वामैं। जे ध्यान रक्खैं कि बु सुद्ध उच्चारण के संगई पढ़ैं।

ञ. पाठ के अन्त में जि सामग्री दी गई ए, बाकूँ अनुदेसक पहले खुद पढ़िकै सुनामैं, बाद कूँ प्रौढ़न तें पढ़वामैं। जे बी है सकै कि प्रौढ़ पूरी सामग्रीन कूँ एक संग नाँय पढ़ि सकैं। तौ बिनतें पहले थोड़ी-थोड़ी सामग्रीऊ पढ़वामैं, बाद कूँ पूरा अभ्यास पढ़वामैं। पढ़िबे कौ मौक्यौ हरेक कूँ दैंगे।

पढ़िबो सिखाते समैं अनुदेसक पढ़ायबे के काजे मानकान कोऊ ध्यान रक्खै। सत्र की समाप्ति पै सिक्षार्थीन कूँ निम्नलिखित स्तर तक पढ़िबो-लिखिबो आय जानो चइए—

- सिक्षार्थीन की रुचि के विषय पै लिखे भये कोऊ आसान पैरा कूँ सई तरीका तें 30 सब्द प्रति मिनट की गति तें बोलि कै पढ़िबो।
- सरल भाषा में लिखे भये छोटे पैरा कूँ 35 सब्द प्रति मिनट की गति तें चुप्पचाप पढ़िबो।
- रास्ता केऊ संकेतान, इस्तहारन, सरल हिदायतन और नव-साक्षरन के ताईं समाचार पत्रन आदि कूँ समझि कै पढ़िबो।
- अपने काम-काज और रहन-सहन के सम्बन्ध मेऊ सरल रूप ते लिखे भये संदेसान कूँ समझने की योग्यता।

5. लिखनौ सिखायबो

लिखनौ सिखायबै के ताईं प्रवेसिका के संगई अलग तें एक अभ्यास पुस्तिकाऊ दीनी ए। जामैं लिखनौ सिखायबै के अभ्यास दिये भये एँ। बिन अभ्यासन कौ कैसे पूरौ कियो जायगो, जाके ताईं अभ्यास पुस्तिकाऊ में निर्देस दिये भये एँ। बिनकूँ पढ़ लेनों चइए।

प्रवेसिका पढ़ायबे के संगई अभ्यास पुस्तिका कोऊ प्रयोग करनौ ए। प्रवेसिका कौ पहलौ पाठ पढ़ायबे के बाद लिखनौ सिखायबै कौ अभ्यास, अभ्यास पुस्तिका केऊ पहले पाठ तें करनौ ए। जा प्रकार प्रवेसिका के प्रत्येक पाठन के संग अभ्यास पुस्तिकान कौ सम्बन्धित पाठ पूरौ करानौ ए।

लिखनौ सिखायबै के काजै सबतें पहिले सिलेटन पै लिखिबो सिखानौ चइए। जब सिलेटन पै लिखिबे कौ अभ्यास है जाये तो बाके बाद पैंसिल तें अभ्यास पुस्तिका में दिये भये अभ्यासन कूँ पूरौ करानौ चइए।

अक्षरन की बनावट के क्रम कूँ ध्यान में रखते भये अक्षरन के अलग-अलग घुमाव (स्ट्रोक) दिये भये एँ। जातें लिखनौ सिखायबो आसान है जायगो। अनुदेसक बा घुमावन कूँ स्यामपट पै लिक्ख कै प्रौढ़न तें सिलैटन पै लिखवायबे कौ अभ्यास करामैं।

6. इमला लिखायबो

जब प्रौढ़ नैक-नैक लिखिबो सीख जामैं, तोऊ बिनैं सीखे भये बर्णान और मात्रान कौ ध्यान राखि कै इमला लिखवामैं। देखि-देखि कै लिखिबो तथा इमला लिखिबे कौ रोजाना अभ्यास करामैं।

जित्तौ प्रवेसिका या अभ्यास पुस्तिका में दियो गयो ए, लिखिबै-पढ़िबै में उत्तौ ई पर्याप्त नाँय। अलग तेऊ लिखबामैं। बिनके व्यवहारन में आयबे बारी चीजन कूँ लिखबामैं।

साफ-सुथरौ लिखिबे पै बिसेस ध्यान देनौ ए। लिखिबे की गति पैऊ ध्यान रक्खें। सत्र समाप्ति है जायबे पै सात सब्दन प्रति मिनट की गति तें देखि-देखि कै लिखिबे की निपुणिता प्राप्त करनी जरूरी ए। पाँच सब्दन प्रति मिनट की गति तें इमलाऊ लिक्ख सकैं।

7. गणित सिखायबो

आपने देख्यो होयगो कि प्रौढ़ कूँ गिन्नौ आवे, पर बु अपनी गिनतीन कूँ लिक्ख नाँय सकै और अपनी गणित सम्बन्धी समस्यान कूँ लिक्ख कै हल नाँय कर सकै। जा प्रवेसिका में तीसरेऊ पाठ तै गिनतीन कूँ लिख्यौ गयौ ए। जाको लिखिबे कौ उद्देश्य जे ए कि आप बा पाठ पै चर्चा करिनौ, पढ़िबो-लिखिबो सिखायबे के बाद गिनतीन कूँ पहचाननौ और लिखनौ भी सिखामैं।

1. पाँचवें पाठ तेऊ गिनतीन कूँ आरम्भ करि कै धीरे-धीरे अगाड़ी गिनतीन की संख्या बढ़ाय दई ए। गिनतीन कूँ सिखायबे मेंऊ बाई क्रमन कूँ अपनानौ ए, जौ पढ़नौ-लिखनौ सिखायबे में। यानी पहिले पढ़नौ या पहचाननौ सिखाये, बाद मेंऊ लिखनौ।
2. चित्रन में बस्तून कूँ गिनि कै बिनकै सामनै गिनती लिखनौ सिखामैं। गणित सिखायबे के अभ्यास, अभ्यास पुस्तिकान में दिये भये निर्देसन के अनुसारई करामैं।

प्रवेसिका के पाठन कूँ पढ़ायबे कौ एक उदाहरण

ब्रज भारती के पहले पाठ कूँ पढ़ायबे के ताईं एक नमूनौ दियौ जाय रयौ ए—

1. चर्चा

जा प्रवेसिका कौ पहलौ पाठ रासलीला को ए। बाकौ चित्र दिखाय कै जा ढंग तें प्रश्न पूछौ—

प्रश्न— जा चित्रन में आप कहा देख रये ऍं ?

सिक्षार्थी— रासलीला

अगर सिक्षार्थी नाँय बता सकैं तो अनुदेसक कूँ स्वयं बता दैनौ चइए— "जे रासलीला कौ चित्र ए।" बाके बाद रासलीला के बारे मेंऊ चर्चा करनी चइये। जा चर्चा में खासतौर तें निम्नलिखित बातन कूँ उभारनौ ए—

1. रासलीला कौ साँस्कृतिक पक्ष
2. रासलीला के उद्देश्य
3. रासलीला तें प्राप्त होयबे बारी सिक्षा

उपर्युक्त बिन्दुन पै प्रश्न करौ। चर्चा के दौरान औरऊ प्रश्नान कूँ जोड़ते चले जाओ। चर्चा में रासलीला के आजकल्ल के सरूप कूँ भी बतानौ चइए।

2 (अ). पढ़ाई

सिक्षण चार्ट में बने भये चित्रन की लंग फिर इसारा करौ। प्रवेसिका मेंऊ बने भये चित्रन कूँ देखिबे के ताईं कहौ। फिर पूछौ— जे कौन कौ चित्र ए ? सिक्षार्थी— रासलीला— या जो कछु बी उत्तर बे दैयें।

अनुदेसक— जा कौ जे चित्र ए, बाकौ नाम नीचे लिख दयौ गयो ए— रासलीला।

'रासलीला' सब्द के नीचे उँगरिया रख कै कहौ— जब हम रासलीला कैमें, चार आवाजन सुनाई दैं—

रा स ली ला

रा में ा कूँ अलग करिकै पढ़ाऔ।

र ा

जाई तरियाँ ली में 'ी' कूँ अलग करिके पढ़ाऔ। जा तरैं रासलीला से रा स ली ला की पहचान कराऔ।

ा और ी मात्रान कूँ र स ल के संग जोरि कै सिखाऔ, जैसे— ा के संग रा, सा, ला, और ी के सैंग री, सी और ली। स्यामपट पै जा मात्रान तथा बर्णान तें बनिबे बारे सब्दान कूँ लिखौ—

र रस रार

स सास सरस सारस

ल लाला लाली रसीला लला लली

चार्ट तें पढ़ायबे कै बाद प्रवेसिका में लिखे भये सब्दान तथा बाक्यन कूँ पढ़ाऔ।

2 (ब). लिखाई

स्यामपट पै एक-एक बर्णन कूँ लिख कै दिखाऔ। अक्षरान कूँ अंशान मेंऊ लिक्खौ, जैसे—

सिक्षार्थीन तें सिलेटन पै लिखिबे कूँ कहौ। सिलेटन पै अभ्यास करिबे के बाद अभ्यास पुस्तिकान में दिये भये निर्देसन के अनुसार लिखबाओ।

2 (स). गणित

जा पाठन में गिनती नाँय। गिनतीन कूँ पाँचवें पाठ तें रख्यो गयौ ए। बाकौ ज्ञान करामैं। पैले स्यामपट पै स्वयं लिक्खौ और प्रौढ़न तें बाकी नकल करिबे कूँ कहौ। गिनतीन के अंकन कूँ पहिचानबाओ और पढ़िबे कौ अभ्यास कराऔ। गिनतीन की पहिचान कै संगई गणित के प्रश्नान कूँ बी हल कराऔ। गणित केऊ मापदण्डन दिये भये एँ। सिक्षकन कूँ बु ध्यान में रखिबे जरूरी ए। सत्र के आखीर में सिक्षार्थी कूँ निम्नलिखित स्तर कौ गणित की निपुणता आ जानी चइये—

- 1 से 100 तक के अंकान कौ पढ़िबो तथा लिखिबो, छोटो-मोटो हिसाब करिबौ, जामैं जोड़नौ और घटानौ, तीन अंकान तें ज्यादा के नाँय होमैं। गुणा करिबौ व भाग द्वै अंकान तै ज्यादा नाँय होमैं।
- भार, नाप-तोल, रुपया-पैसा, दूरी तथा क्षेत्रफल की मीट्रिक इकाइयन व रुपया की इकाइयन कौ काम चलायबे लायक ज्ञान है जाय।
- अनुपात तथा ब्याज की साधारण जानकारी तथा बाकौ अपने काम-काज तथा रहन-सहन में प्रयोग। जामैं भिन्न बारी संख्यान नाँ होमैं।

नोट :– चर्चा करिबे तथा साक्षरता को ज्ञान देबे के पहले पाठ कौ जे एक उदाहरण दियो गयौ ए। जे केवल संकेतऊ ए। प्रवेसिका के दूसरे पाठन के सिक्षण कौ जेई तरीका होयगो।

ब्रज भारती
(पाठ इकाई विवरणिका)

पाठ संख्या	मूल शब्द	वर्ण/मात्राएँ	गणित	राष्ट्रीय साक्षरता मिशन में इंगित प्रेरणादायी कार्यक्रम	विषय एवं चर्चा बिन्दु
1	रास लीला	र ा स ल ी	—	धार्मिक तथा सांँस्कृतिक कार्यक्रम	साँस्कृतिक पक्ष
2	राधा मोहन	ध म ो ह न	—	चेतना जागृति	सामाजिक एकता
3	गैया बछरा	ग ै य ब छ	—	कार्यात्मक शिक्षा, कौशल विकास, आर्थिक कार्यकलाप	पशुपालन : गो-पालन से लाभ
4	कदम करीलकुंज	क द ु ं ज	—	चेतना जागृति	वृक्षारोपण : सामाजिक वानिकी
5	डोरी निवाड़ कंठी माला	ड ि व ड़ ठ	1 से 2 तक गिनती	कार्यात्मक शिक्षा, कौशल विकास, आर्थिक कार्यकलाप	गृह उद्योग : डोरी, निवाड़ एवं कंठी माला बनाने का कार्य
6	गोबरधन पूजा भैयादूज झूला	प ू भ झ	3 से 5 तक गिनती	धार्मिक तथा साँस्कृतिक कार्यक्रम	त्योहारों का महत्त्व
7	मथुरा घाट सफाई	थ घ ट फ ई	6 से 10 तक गिनती	स्वास्थ्य से सम्बन्धित	स्वच्छता : स्वच्छता का महत्त्व, परिवेश की स्वच्छता
8	अभ्यास पाठ (कविता)	—	—	साँस्कृतिक कार्यक्रम	साँस्कृतिक पक्ष
9	आनंदी औतार खुरपिया	आ औ त ख	11 से 20 तक गिनती	चेतना जागृति	स्त्री-पुरुष समानता
10	कलेऊ अंकुरित चना	े ऊ अं च	21 से 30 तक गिनती	स्वास्थ्य से सम्बन्धित	स्वास्थ्य : पौष्टिक आहार
11	ढोलक ओढ़नी चौबारा	ढ ओ ढ़ ी	31 से 40 तक गिनती	साँस्कृतिक कार्यक्रम	साँस्कृतिक पक्ष
12	अमरस इमली उदला	अ इ उ	41 से 50 तक गिनती	स्वास्थ्य से सम्बन्धित	फल संरक्षण : आम से अमरस, अचार, चटनी बनाना, इमली का प्रयोग
13	शोषण ऋण	श ष ण ऋ	51 से 60 तक गिनती	चेतना जागृति कार्यात्मक शिक्षा, कौशल विकास, आर्थिक कार्यकलाप	स्व-रोजगार : रोजगार के लिए बैंकों से मिलने वाली सुविधाएँ, साहूकारी प्रथा एवं कानून

14	ऐनक पत्र	ऐ त्र	61 से 70 तक गिनती	स्वास्थ्य से सम्बन्धित	स्वास्थ्य : आँखों की देखभाल आँखों में होने वाले रोग एवं उपचार
15	अभ्यास पाठ (कविता)	—	—	चेतना जागृति	पारिवारिक सम्बन्ध एवं सद्भावना
16	कक्षा ज्ञान एकता	क्ष ज्ञ ए	71 से 80 तक गिनती	राष्ट्रीय मूल्य, चेतना जागृति	राष्ट्रीय एकता : देश प्रेम, साक्षरता का महत्त्व
17	ब्रज आश्रम वृंदावन गोवर्धन	्र श्र ृ ँ	81 से 100 तक गिनती	चेतना जागृति, धार्मिक तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम	सांस्कृतिक पक्ष : ब्रज भूमि का महत्त्व सामाजिक वानिकी : वनों का महत्त्व, वन संरक्षण
18	संयुक्ताक्षर (पाई हटाकर)	—	—	चेतना जागृति	सामाजिक - सांस्कृतिक पक्ष : ब्रज भूमि का महत्त्व
19	संयुक्ताक्षर (पाई हटाकर)	—	—	स्वास्थ्य से सम्बन्धित	स्वास्थ्य : व्यायाम का महत्त्व पौष्टिक आहार : हरी सब्जियों का सेवन
20	संयुक्ताक्षर (घुंडी हटाकर)	—	—	चेतना जागृति	अंधविश्वास
21	संयुक्ताक्षर (हलन्त लगाकर)	—	—	चेतना जागृति	विकास योजनाएँ—विकास खण्ड से मिलने वाली सुविधाएँ, गोबर गैस संयंत्र
22	संयुक्ताक्षर (र के रूप)	—	—	राष्ट्रीय मूल्य, चेतना जागृति	देश-प्रेम : राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रीयता का महत्त्व
23	पठन अभ्यास (कविता)	—	—	चेतना जागृति, राष्ट्रीय मूल्य	देश-प्रेम : राष्ट्रीय एकता का महत्त्व
24	अभ्यास पाठ	—	—	चेतना जागृति	सामाजिक मूल्य
25	अभ्यास पाठ	—	—	चेतना जागृति	स्त्री-पुरुष समानता
26	अभ्यास पाठ	—	—	कार्यात्मक शिक्षा, कौशल विकास, आर्थिक कार्यकलाप	पशुपालन : गो-पालन
27	अभ्यास पाठ	—	—	चेतना जागृति	पर्यावरण : जल, वायु तथा ध्वनि प्रदूषण
28	अभ्यास पाठ	—	—	चेतना जागृति, राष्ट्रीय मूल्य	देश-प्रेम : राजा महेन्द्र प्रताप
29	अभ्यास पाठ	—	—	चेतना जागृति	श्रीकृष्ण का जीवन चरित्र

रासलीला

र ा स ल ी

र	रस
ा	रार
स	सास रास सरस सारस
ल	लाल लला लाला रसाल
ी	लली लाली लीला रसीला

रास

सरस रास

लला लला रास

लली लली सरस रास
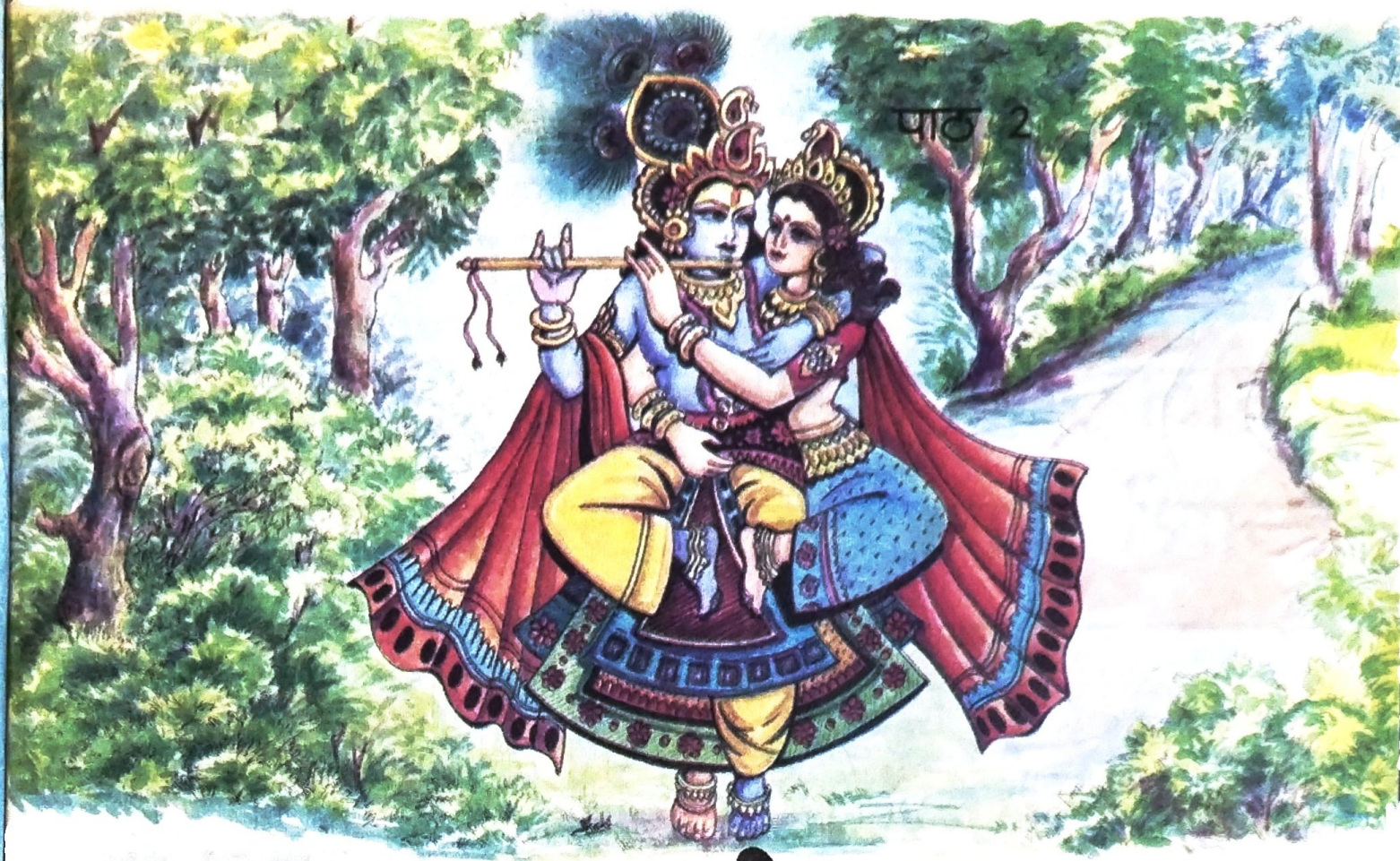
राधा मोहन

ध म ो ह न

ध	धरा	धारा	साध	धीर
म	मामा	माली	मीरा	मसाला
ो	मोर	मरोर	लोरी	मसोस
ह	हल	हीरा	सहारो	होरी
न	नल	नाम	सलोना	मान

सीधा मम माला धीमा सीमा

रोर महल मोह होम मनमोहन

होला लोहो सोहर नाली नर

नारी धन नानी नीम मनोहारी
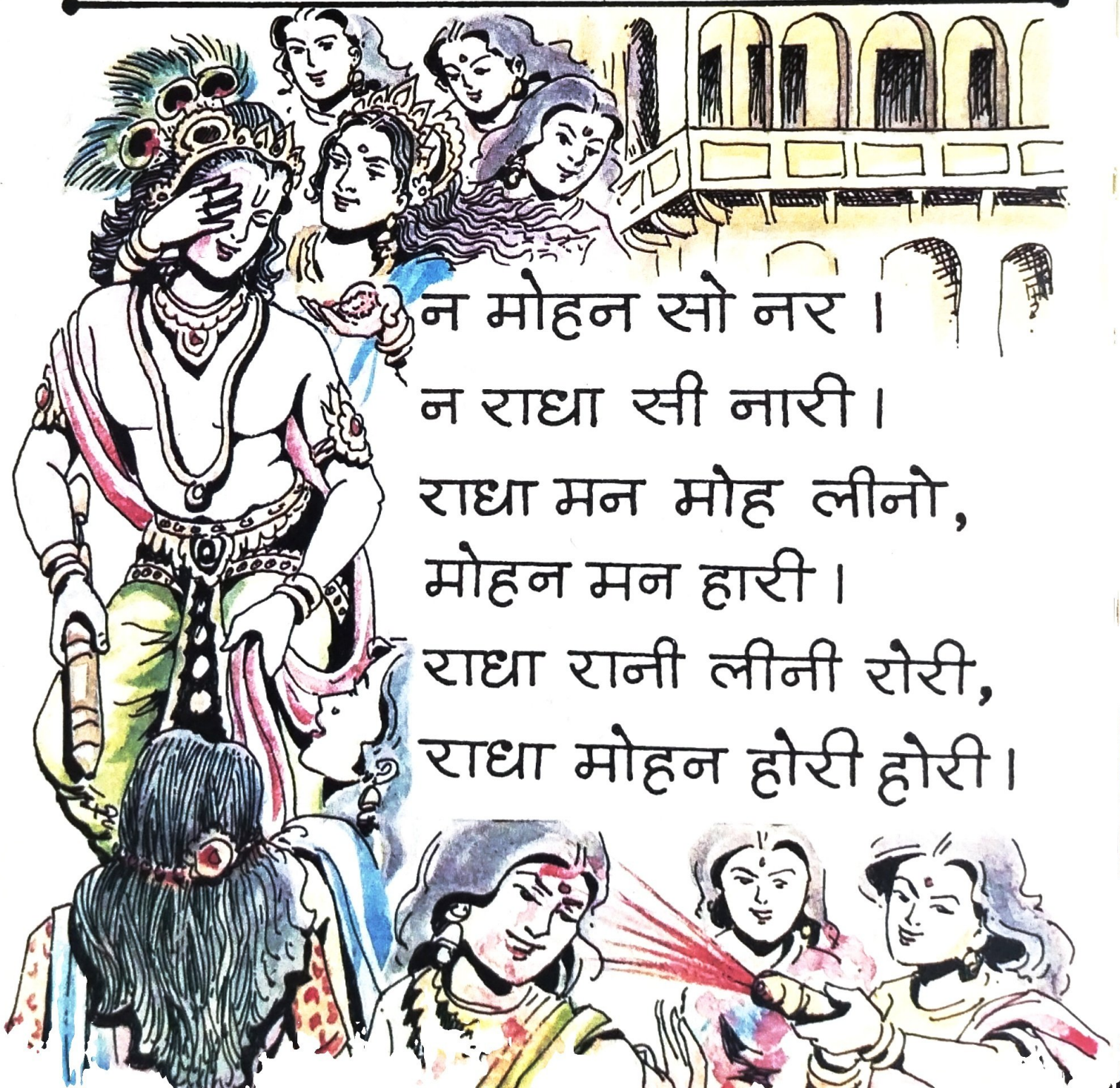
न मोहन सो नर ।
न राधा सी नारी ।
राधा मन मोह लीनो,
मोहन मन हारी ।
राधा रानी लीनी रोरी,
राधा मोहन होरी होरी ।

पाठ 3

गैया बछरा

ग ै य ब छ

ग	गली	गाना	गोधन	गहना
ै	गैल	मैना	सैन	हैरानी
य	यम	धाय	मैया	नैया
ब	बल	बाबा	बीर	बासन
छ	छन	छमा	छोरी	छाछ

गाम गाल गारी गोरी रैन
नैन मोय माय बस बर
बहना बाग बीस बोल बोरा
छन छान छोरी छोरा छैल-छबीली

छोरी री छोरी।
छैल छबीली छोरी।
गोरी री गोरी,
छैल छबीली गोरी।
गा री गा,
गली गली गा।
गोरी री गोरी,
छैल छबीली छोरी।

राधा बोली,
बहना री बहना।
रैन है गयी,
गैया बछरा ला।

कदम करीलकुंज

क द ु ं ज

क	कल	काम	कीर	कोयल
द	दल	दादी	कदली	बादर
ु	सुर	कुबरी	गुरु	करछुल
ं	रंग	कंस	दंगल	बंसी
ँ	बाँसुरी	पाँसुरी	लहँगा	हँसुली
ज	जग	जननी	जसोदा	जुगाली

• सिखायें- ँ का प्रयोग उच्चारण तथा र + ु = रु ।

कब दाना नंदलाल दुकान दोहन
हँसी जनम जमुना दही कोंधनी
कान मधुर रूमाल हंस काँस
बाँस मजीरा गुलाल कजरी कारोबार
कछार दीन मलंग फाँस जोरी

मोहन गैया बछरान को बन में लै जायो करै। कछारन में जायो करै। नंदलाल बांसुरी बजायो करै।

करील कुंजन में कीर बोलें, मोर बोलै, कोयल मधुर - मधुर बोल बोलें। सरोवर में हंसन की जोरी रहो करै।

बांसुरी बजो करै। कीर, मोर बोलो करैं। कोयल कुहुक - कुहुक बोल सुनायो करै। जंगल में मंगल होबै करै।
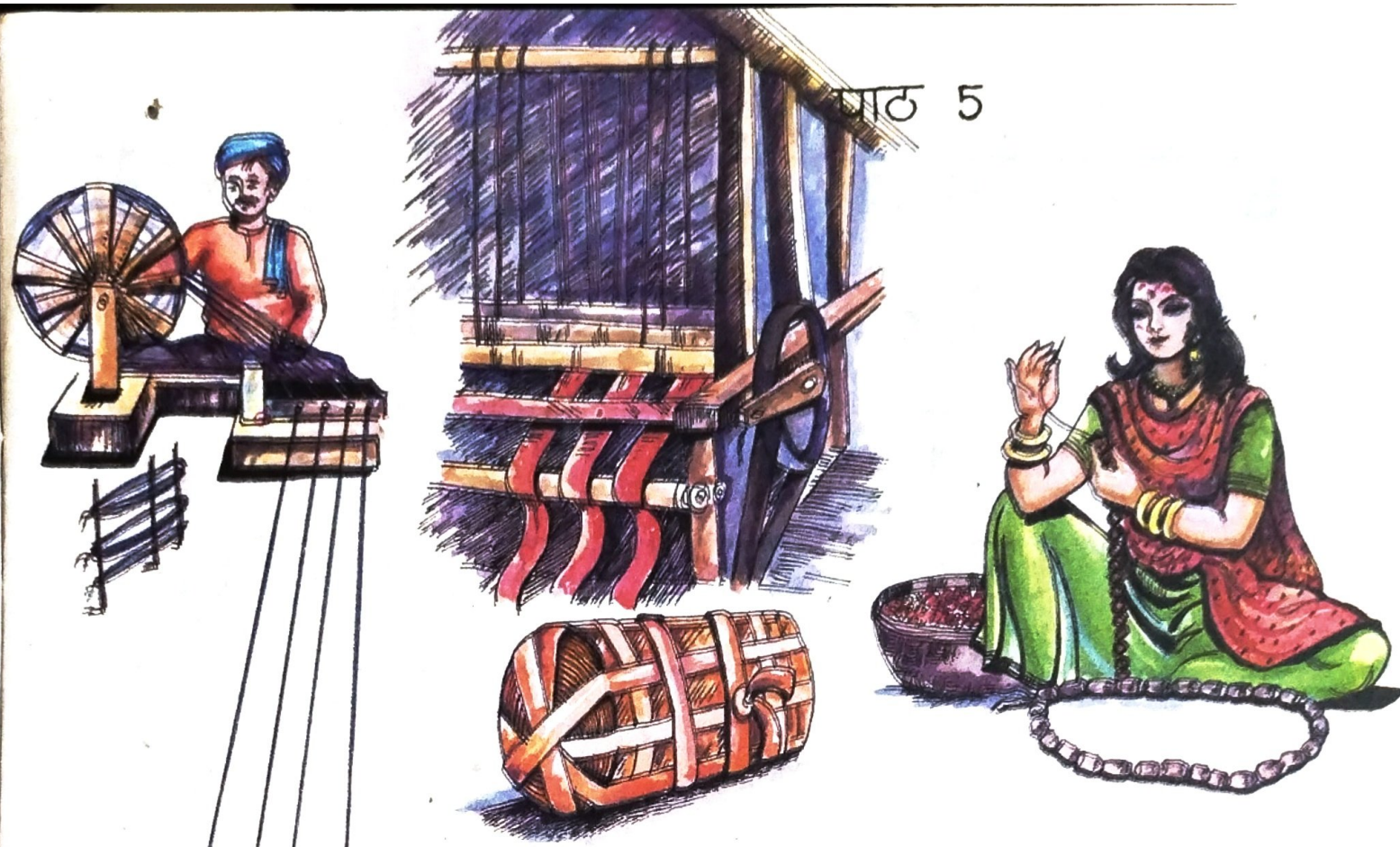
डोरीनिवाड़ कंठीमाला

ड ि वड़ ठ

ड	डगर	डार	डंडा	डोकरी
ि	रसिया	किसोरी	बिछिया	पनिहारिन
व	वन	सावन	दावानल	साँवरिया
ड़	किवाड़	सड़क	लकड़ी	ककड़ी
ठ	ठसक	ठाकुर	छठी	कठुला

डलिया	बिहारी	ठाँव	नाड़ी	ठकुरानी
डोली	कालिया	बावरी	लड़का	कोठा
दानव	डिबिया	डोरा	लावनी	हँसिया
गाड़ी	कठोर	जाड़ा	माधव	छड़िया

कामहि कंठी, कामहि माला

बिहारी, निबाड़ कारीगर सैं लै लै। डोरी की लरी करवाय लै। सलमा कूँ बुलवाय कै कपड़ा बुनवा दुकान मैं धरवाय दै, बिकरी होयगी।

धन सैं कारबार कर। ठाली

1 2

मत बैठ। समै मत गवाँ। कछु ना कछु कर। धींगा - धींगी ठीक नांय। बन में करीलकुंज बिसराय कदम, नीम बुबवाय कै धन कमा। ठाठ सैं रह। कंठीमाला छाँड़िकै काम कर। कंठीमाला डोकरा - डोकरीन कूँ रहन दै।

"कामहि कंठी है, कामहि माला है।"

पाठ 6

गोबरधन पूजा भैया दूज झूला

प ू भ झ

प	पल	पीपल	पपीहा	पाहुन
ू	पूजा	गूजरी	नूपुर	सूरदास
भ	भला	भीर	भोर	भैना
झ	झबला	साँझी	झूमर	झिलमिल

सरुप रुखा रुठना जरुरी डमरु
पिछाड़ी सूप झींगुर भाँग पीला
कुरुप भाभी छूँछा झिझक मूरी
पाला गरुर दूध भरपूर झरना
झंडा भूल मझोला मसूर पैसा
मूँग धूल भोरी झकझोर

दिवारी

दिवारी पै दीपक जरैं। दिवारी बाद गोधन बनायो जाय। गोधन - बनाय वापै दूध की धार डारी जाय। गोधन की पूजा मैं गैया - बछरा हूँ पुजैं।

3 4 5

•सिखायें - र + ु = रु , जैसे - रुप ।

दिवारी संगहि भैया - दूज मनायी जाय। भैया - दूज पै भैया - भैन जमुना में संग संग नहावें। जाय जमदुतिया कहैं। जमदुतिया भैया-भैन कौ दिना मानो जाय।

सावन मास झूला परैं। बालक-बालिका नीम पै झूला डारि झूलो करैं। मलहार गाय कैं झोटा दियौ करैं :-

"सावन हमैं न सुहाय, सुधि लागी मोय बीर की।"

भादों मास जनम दिना पै भगवान हूँ पालना झूलैं।

पाठ 7
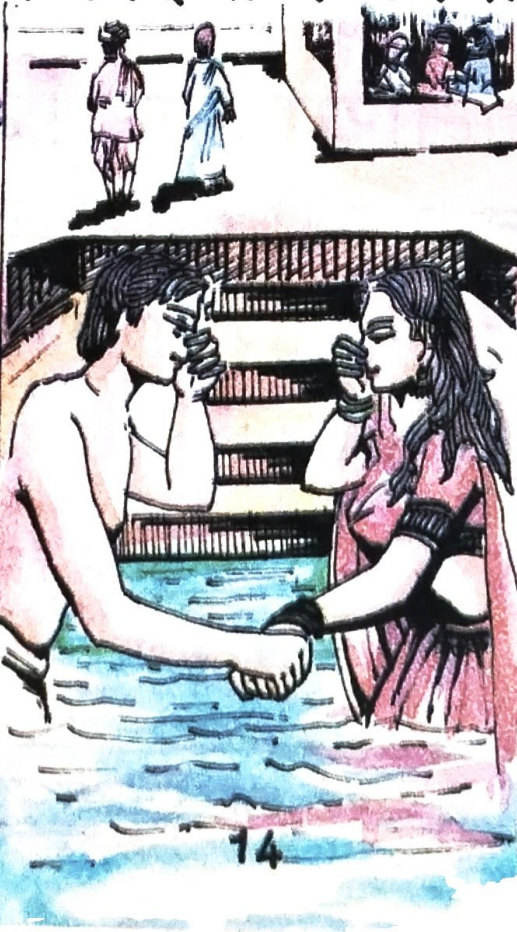
मयुरा घाट सफाई

थ घट फई

थ	थन	थान	कथा	मथानी
घ	घर	घानी	घोसला	घुँघरु
ट	टाट	टोकरी	मटकी	पटवारी
फ	फल	फूल	फागुन	फैसला
ई	ईद	ईंधन	सगाई	भाई

नथुनी घी टैंटी मुनाफा ईंट
थाला हाथी नथ सारथी थिरकन
घटा कटोरी फोकट मिठाई लुगाई
रथ घोल घंटा फंदा ईंगुर
घाघरा साथी वटाई फुलवारी कलाई

जमुना-जल

जमुना घाट सुंदर लगैं। घाटन मैं बिसराम घाट बडौ सुंदर वापै साँझ कूँ घी कौ दीपक जरै, घंटा बजैं। जमुना जल मैं दीपक सिरैं, सुंदर लगैं। जमुना मैं नाव

6 7 8 9 10

डोलैं। बड़े भोर लोग जमुना जल मैं नहावैं। सूरज कूँ जल दैंवैं।

पर जमुना जल पहलो जैसो नायँ। गँदलो है रहौ है। साड़ी-छपायी कै कारन या जल कौ रंग हूँ बदल गयौ है। सहर की नालिन कौ मैलौ पानी जामैं पड़ै। गँदलो पानी सों हानी ही हानी। जमुना जल साफ रखिबैं कूँ सरकार कोसिस मैं जुटी गयी है। सबकी मदद सों जल साफ है जायगो।

पाठ ४
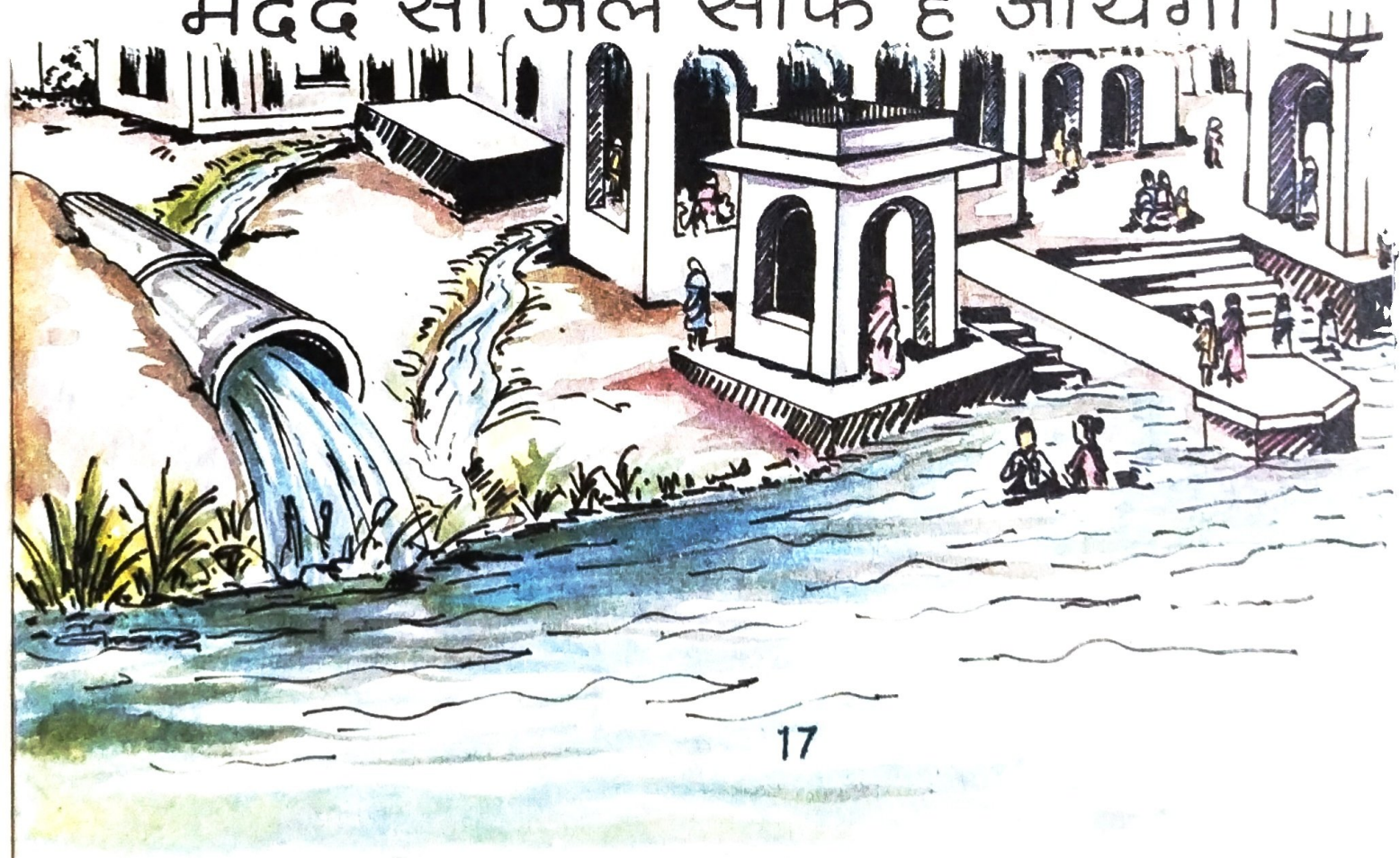
रास-रस

डोल रही हैं राधा सोनी,
सजि साँवरिया संग।
कुंजन बोलैं मोर पपैया,
रस कालिंदी लंग।।

घाट-घाट पै गैया बछरा,
जन-जन कूँ हरसामैं।
कदम डाल पै झूला परि गये,
माधव मधु मुस्कामैं।।

- सत्यदेव आज़ाद

आनंदी औतार खुरपिया

आ औ त ख

आ	आम	आलू	आँवला	वथुआ
औ	औरु	औलाद	औजार	औघड़
त	तगड़ी	तीज	तोतली	पतीली
ख	खबर	खीर	माखन	राखी

पुआल औटना तंबूरा नटखट

आजादी औसर मोती खिड़की कबूतर

कछुआ पीतल सखी आँचर बखिया

आसमान गवाओ तुलसी पुरखा तुला

आँसू खोआ तीर आली धतूरा

गाम कै पियारै

आजु गाम मैं आनंदी और औतार काम पैं निकसै। किसान हिल-मिलिकैं काम करिबैं लगैं। बुआई होन लगी। सबई आनन्द मगन हैं, नाचबै गाइबै लगै।

11	12	13	14	15
16	17	18	19	20

औतार की घरबारी आनंदी समझदार निकरी। काम की खबर राखैं, घरहु सँभारैं, ढोरन कूँ पालैं। पानी भरैं। रोटी-दार बनावैं, सबन कूँ खिलावैं, आपहु खाबैं। दिन- राति मगन रहैं।

घर मैं दूध, दही, घी, माखन सबई भरपूर रहिबै लगौ। मिहनत सैं आनंदी और औतार दोनोंन कूँ सुख भयो। गाम कैं पियारैं बनैं।

पाठ 10

कलेऊ अंकुरित चना

े ऊ अं च
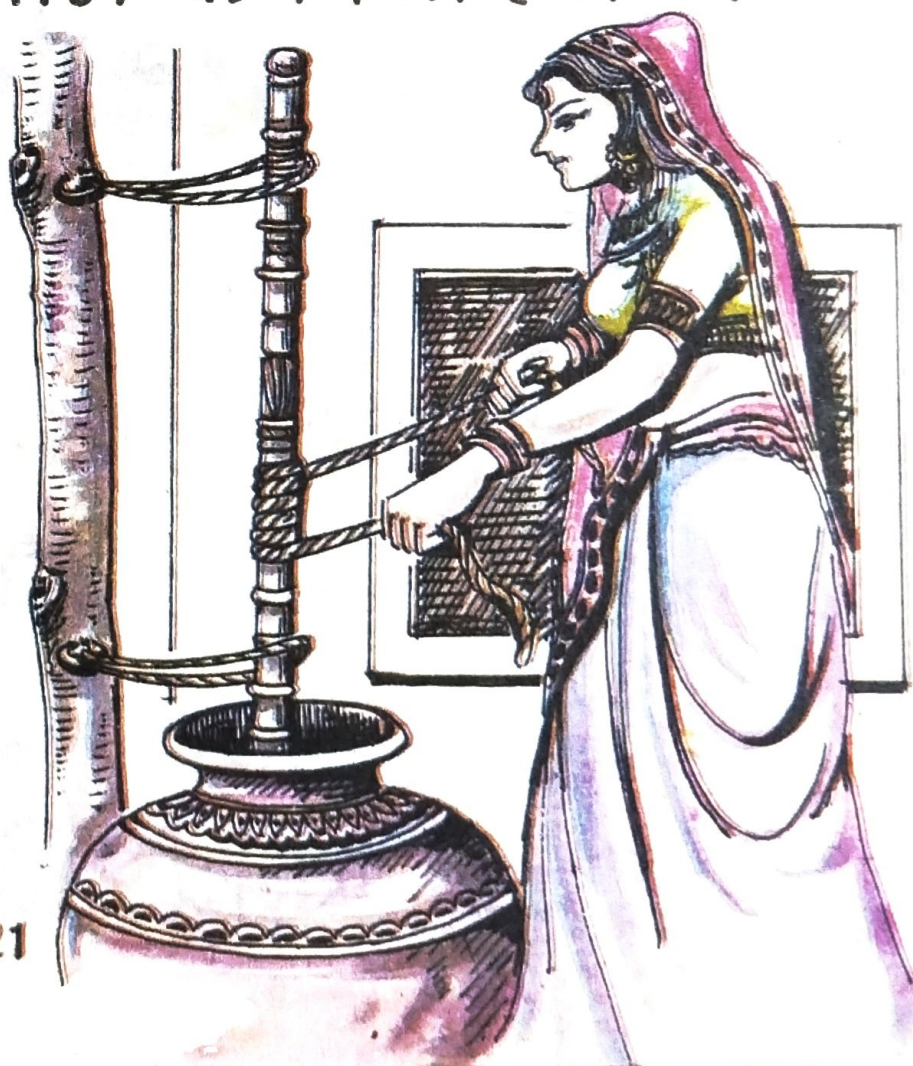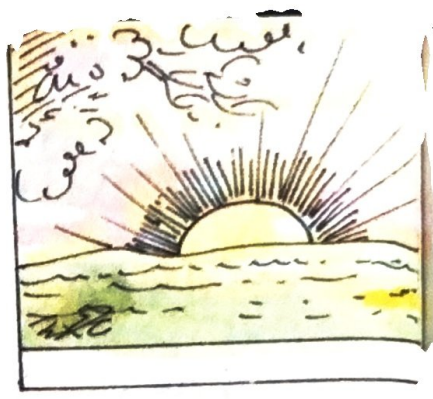
े	पेड़	देवर	सहेली	कनेर
ऊ	ऊन	ऊखल	जड़ाऊं	बलदाऊ
अं	अंग	अंगूठी	अंटी	अंकुर
च	चतुर	चितचोर	चितवन	चुनरी

हमेल गाऊ कंचुकी अंटसंट
केवट ताऊ अंजन ऊपर चितकबरा
दहेज अंधा चिरिया अंदर दाऊ
जलेबी झमेला खड़ाऊँ अंडा चकिया
अंबार ऊँचा खेत खेल ऊबड़ खाबड़

ताकत दैवे वारो भोजन

बेर और केला नीके फल हैं,जिनके खायबे तें शरीर कूँ ताकत मिलै।सबहिं लोगन कूँ सेवन करनों चाहिये। चना में शरीर कूँ बनायबे की ताकत होय। अंकुर उपजे चनान में विटैमिन 'सी' हूँ

21	22	23	24	25
26	27	28	29	30

होय। याही सौं याकौं कलेऊ सबन कूँ करनों चाहिये।

छोटे बालकन कूँ शरीर बनायबे बारो भोजन लैनों चाहिये। दूध के संग-संग कछू ठोस भोजन हूँ देनों चाहिये। बड़े बालकन कूँ नैक दूध तथा रोटी-दाल कौ भोजन दैनों ठीक है, जि अंग-अंगहु बनावै तथा ताकत दैवे वारो हूँ होय। बड़े युवा आदमी कूँ ताकत दैवे वारौ भोजन करनो चाहिये।
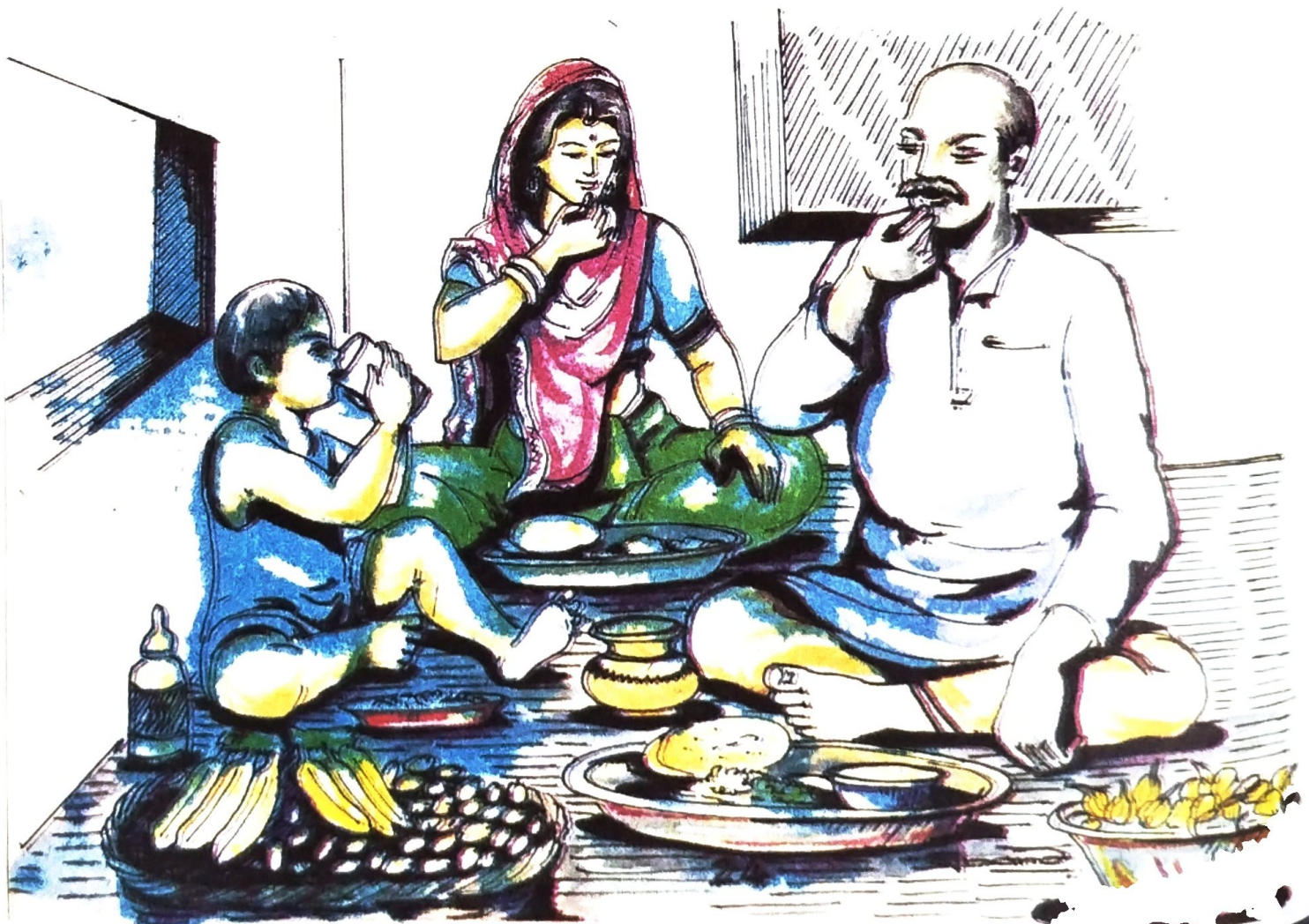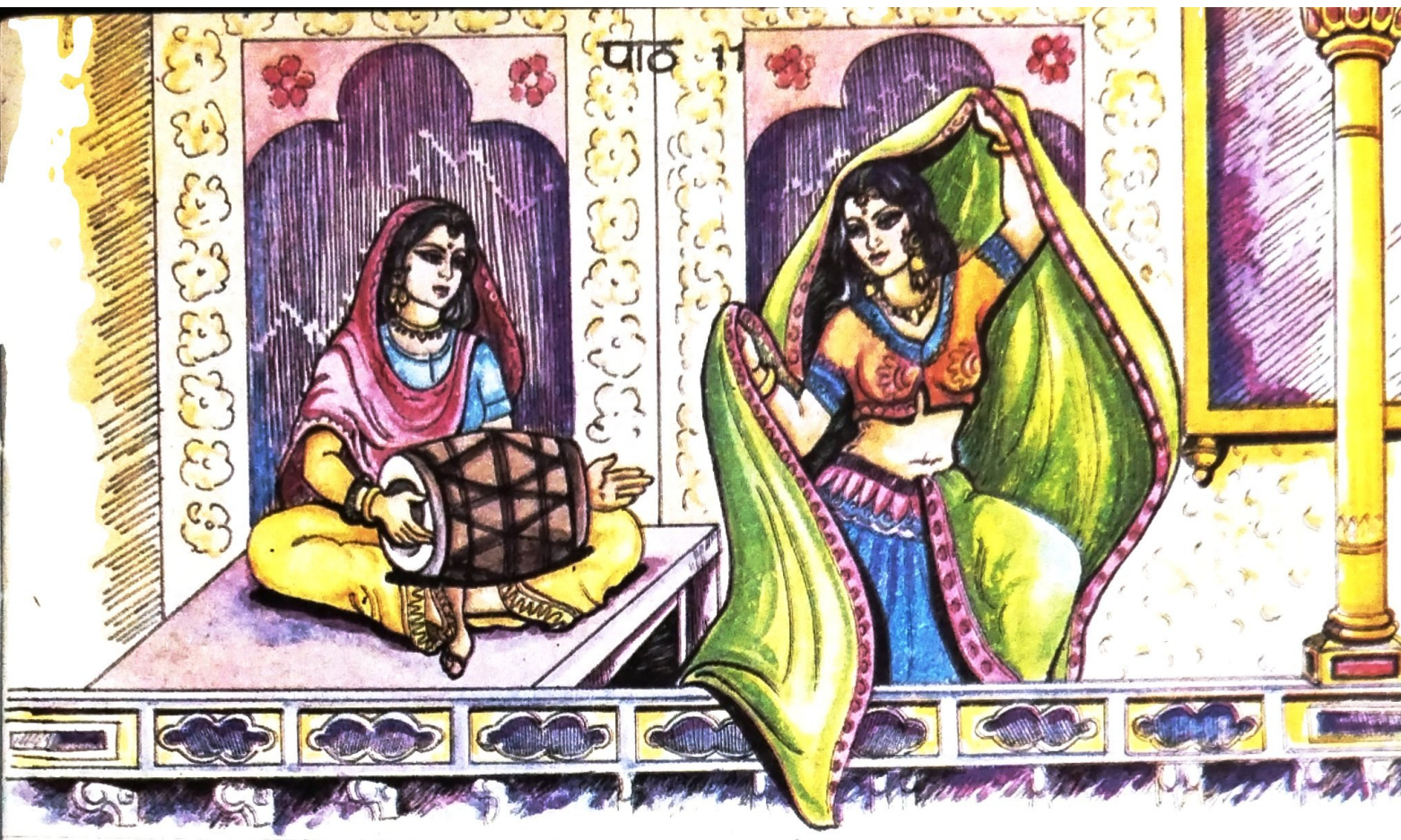
ढोलक ओढ़नी चौबारा

ढ ओ ढ़ ौ

ढ	ढपली	ढोर	ढींगरा	ढंग
ओ	ओस	ओखली	ओट	ओझल
ढ़	पढ़ना	गढ़	बाढ़	मढ़ी
ौ	पौधा	मौर	गनगौर	भौजी

ढैया	ओटपाय	कढ़ैया	मुखौटा	
बुढ़ापा	ओला	ढ़लान	ढीठ	ओढ़ा
ढाल	ओसरा	लोढ़ा	जौहरी	मनमौजी
गाढ़ी	पौरी	सरौता	बढ़ई	ओर
ढेर	ढकोसला	चढ़ाई	सिरमौर	गौरा

आज बिरज में होरी रे रसिया

होरी पै नर-नारी खेलें-कूदें। सब हिल-मिल के होरी खेलें। हाथन में रंग भरी पिचकारी लैकें लाल, हरो, बैंजनी, नीलौ रंग छिड़कें। मुख पै गुलाल लगाय के हँसें और हँसावें। देखत में बड़ो नीकौ

31	32	33	34	35
36	37	38	39	40

लगौ। सब ओर रंग बिरंगौ गुलाल ही गुलाल दीखै –

'चलत गुलाल लाल भये बदरा'।

होली के समय आदमी ढोल बजावैं और धमार सुनावैं। औरतें रंग-बिरंगी ओढ़नी ओढ़ि कैं, पायन में घुँघरू बाँध कैं छमक-छमक नाचैं।

होरी के दिना मीठे-मीठे गूझन कौ पकवान बनैं। लोग एक दूसरे कूँ बड़े भाव सूँ खवावैं। सबहि एक दूसरे सों गले मिलैं और मोद मनावैं।

होरी कौ परब हमारे देश कौ विशेष परब है। यामें सब धरमन के और सबहि जातिन के लोग अति नेह भाव सूँ गले मिलैं; सब भेद भाव मिटि जायँ। सब जन मिलिकै ढोलक और झाँझ के संग गावैं।–

'आज बिरज में होरी रे रसिया'

अमरस इमली उदला

अ इ उ

अ	अमर	अनार	अखबार	अटारी
	अनवट	अमरूद	अजगर	अनजान
इ	इनाम	इलाज	इमारत	इकहरा
उ	उमर	उपाय	उपजाऊ	उलाहना

अखरोट अगहन इंदिरा उपकार

अलख इमरती उधार उदास इलायची

इंजन अचरज असर इकाई उपरा

उदार उपहार अजवाइन अजामिल अदरख

अलक इतर उपचार इतउत उबटन

अमरस कौ आनंद

मोहन इतकूँ आ। बात सुन। गरमी की रितु है। मीठे - मीठे आम मँगाय लै। आजु अमरस बनाविंगे। सब हिल-मिल कैं अमरस कौ आनंद लिंगे। आम की मिठास के आगे लडुआ; पेड़ा- मिसुरी

41	42	43	44	45
46	47	48	49	50

सबु फीके लगौं।

इमली पौरी मैं परी रहन दै। टेंटीन ने डलिया मैं भरि लै। दौरिकैं जा, दिन मुदिबै बारौ है।

उदला चौका मैं धरौ है। अपनी महतारी सैं पूछि लै- थारी, झारी, कटोरी कितकूँ धरी हैं। लोहरौ भैया खेत पैं गयो है। थोरी देर पाछे बगदैंगौ।

सुन, चौंतरा पैं सीरक मैं गैया बाँधि आ। छिरकाब करिलै। भोतु काम परै हैं, नेकु फुरती करि।
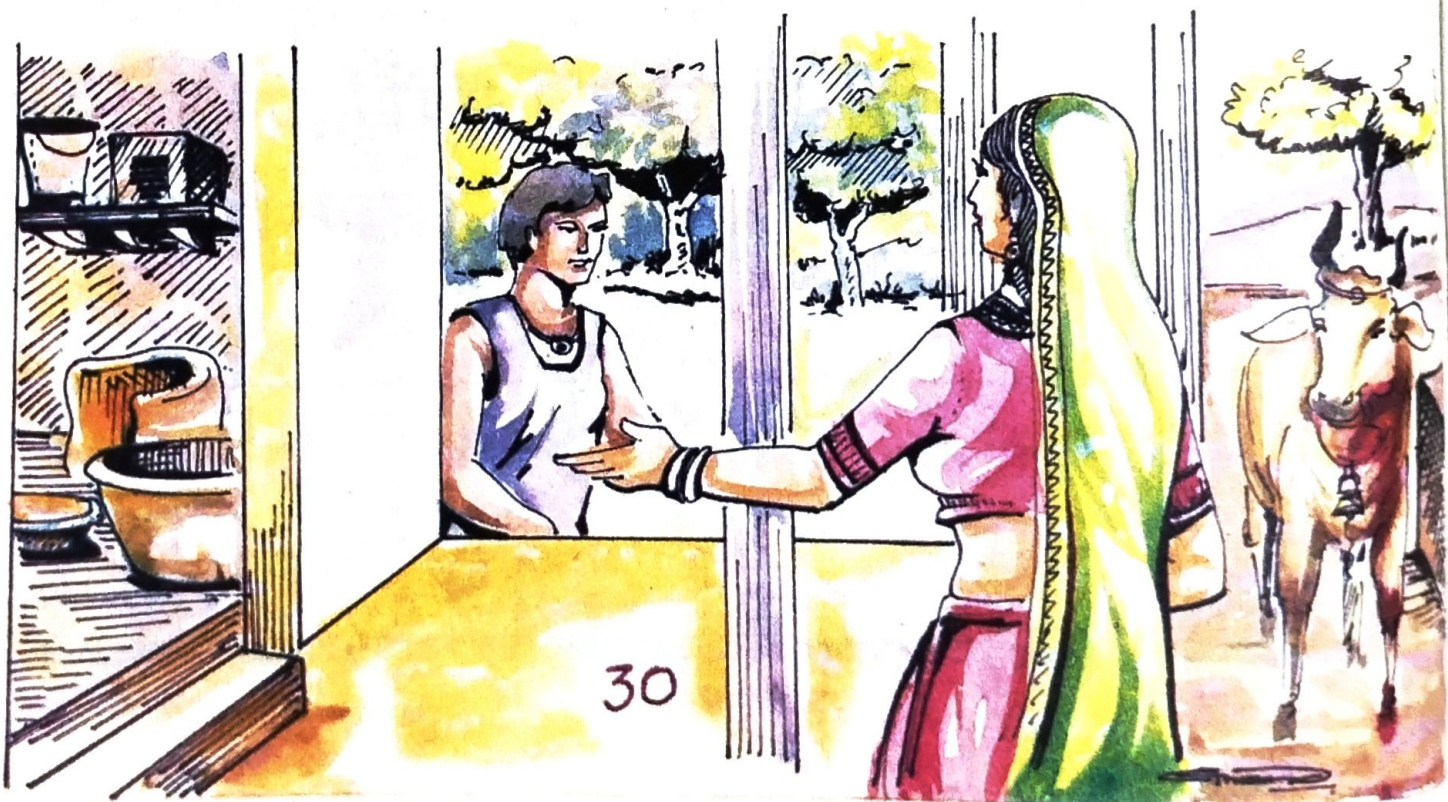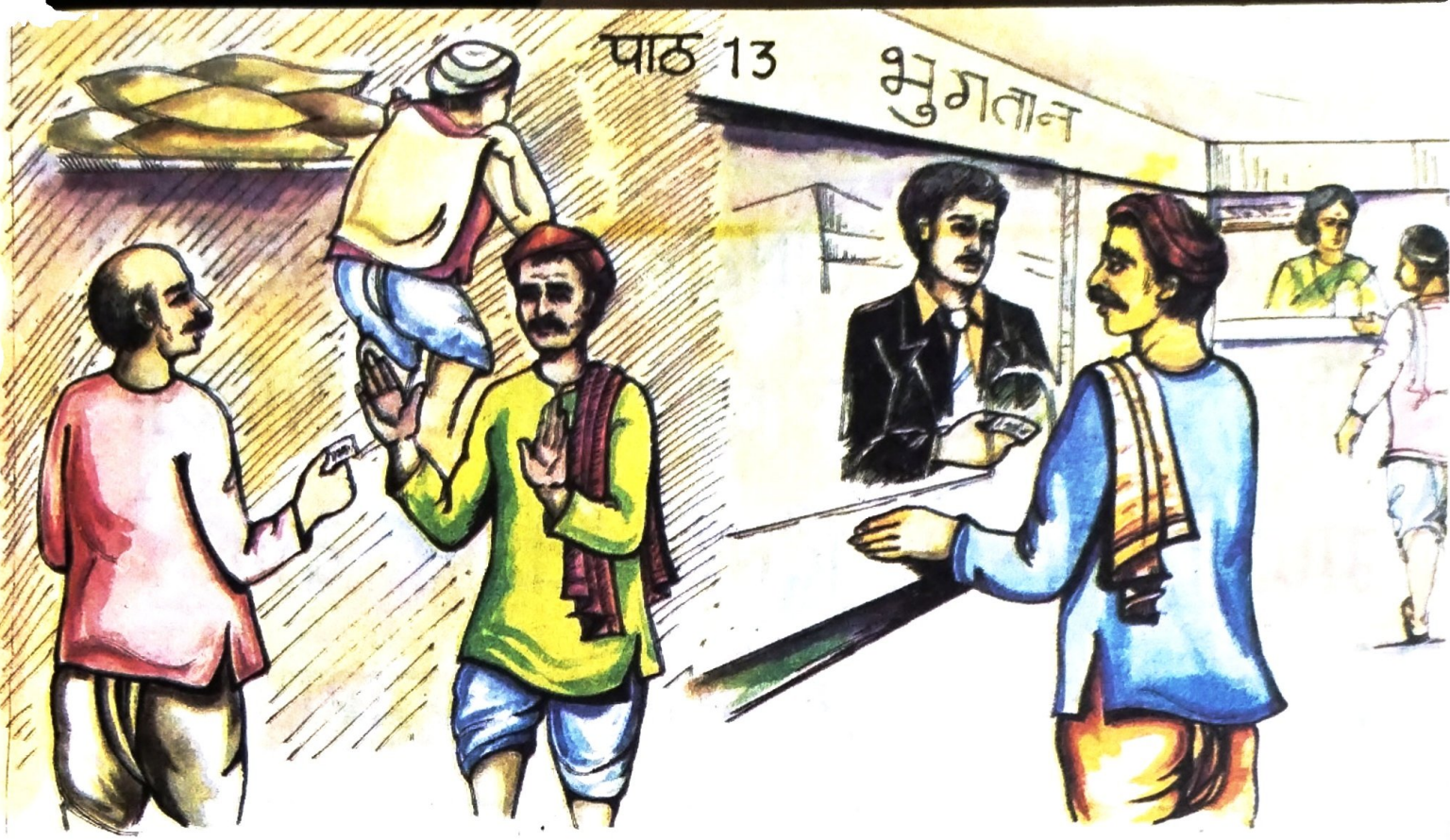
शोषण ऋण

श ष ण ऋ

श	शहद	शिव	शोभ	शैल
ष	आषाढ़	ऊषा	भाषा	पुरुष
ण	कण	करुणा	गुणी	गणित
ऋ	ऋषि	ऋतु	ऋणी	उऋण

शंकर संतोष परमाणु ऋचा अवगुणी

केशव घोष विषधर कारण महेश

शीतल शोषक दोष पाषाण रोहिणी

गणेश पोषण विषय विशेष कोष

शिशु शूल अभिलाषा चीरहरण

शोषण सैं बच जायगौ

महाजन ने संता कूँ ऋण दीयौ। खेत-बाग- बगीचा सबई रहन रखने परै, एकु घरई बचौ। संता धीरे-धीरे करिकैं ऋण चुकता करैगौ।

ऋण कौ बियाज दिन-दूनौ- राति

51	52	53	54	55
56	57	58	59	60

चौगुनौ बढ़ै। जाकौ लाभ महाजन उठाबैं। ऋणी कौ शोषण करैं।

ऋण लैकैं संता भोतु दुखी भयौ। राति दिना चिंता मैं सूखौ जाय। काई तरियाँ ऋण चुक जाय, संता जाकी जुगाड़ मैं है। सरकार सैं सहायता माँगी है। मिलिबै कौ पूरौ भरोसौ है। गणेश जी नें चाही तौ या आषाढ़ मैं उऋण है जायगौ। तब संता शोषण सैं बच जायगौ।
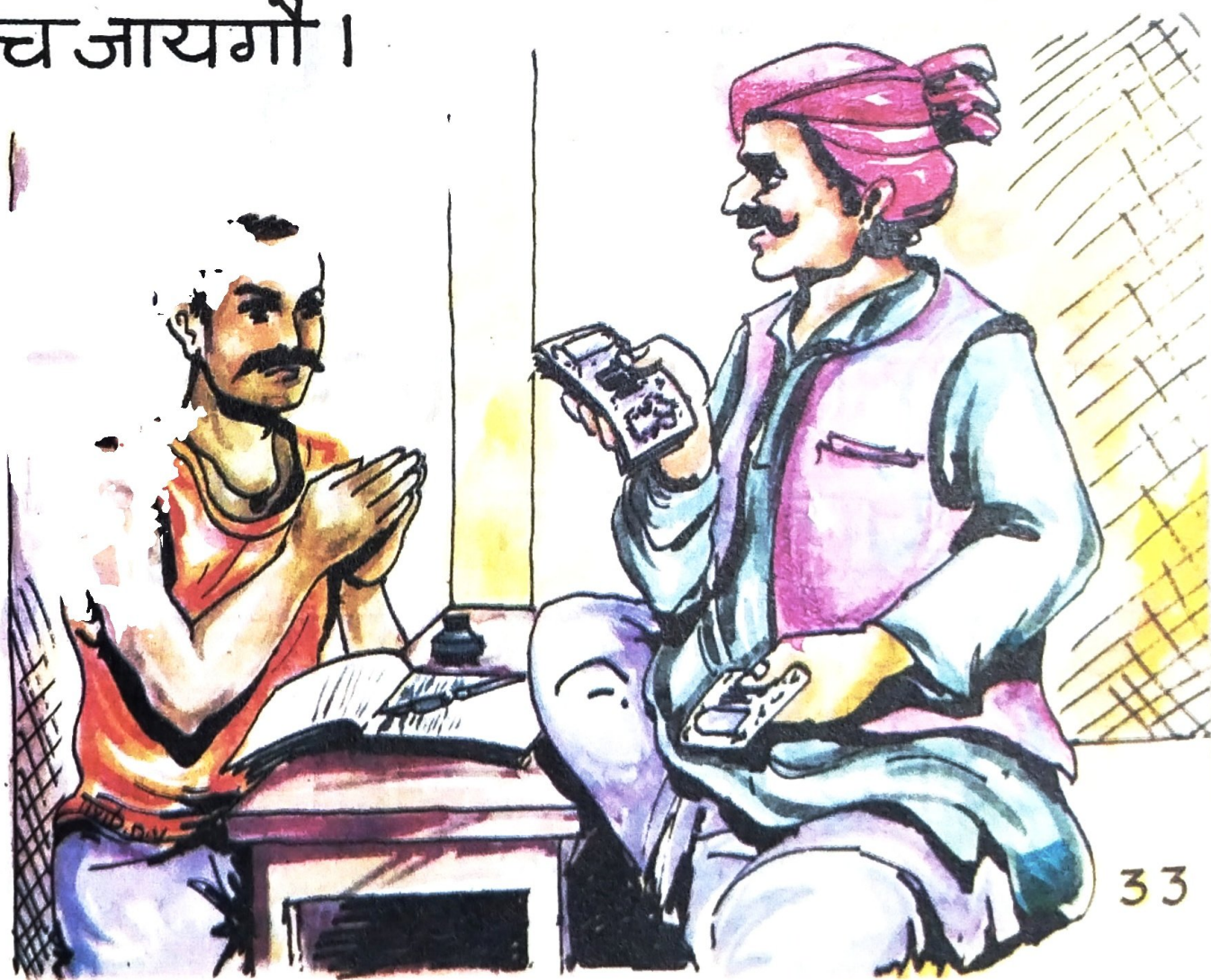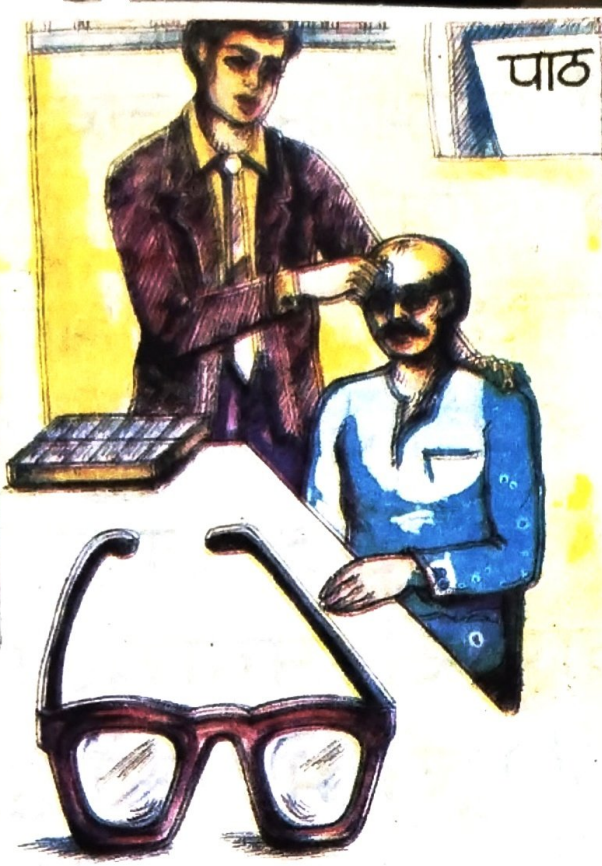
ऐनक पत्र

ऐ त्र

ऐ | ऐसौं ऐन ऐपन ऐंठन

ऐलान ऐरावत ऐब ऐंचातानी

त्र | त्राण मित्र त्रिशूल मंत्री

गायत्री शत्रु त्रेता त्रिवेणी

आँखि है तौ जहान है

मानुस की आँखि बड़े काम की चीज है। आँखि नांय होय तो संसार महिं चारों ओर अँधरौई अँधेरौ है।जो मानुस आँखिन की देखभाल नाय राखैं बाकू पछितानौं परैं।

सावित्री की पुत्री राजरानी ने मोतु दिनान तक आँखिन की खराबी के कारण मास पायौं।पवित्र त्रिवेणी कौ नहान, त्रिभंगीलाल के दरसन,

61	62	63	64	65
66	67	68	69	70

गायत्री कौ जाप सबई छूटि गये। काम काज करिबै मैं लाचार हैं इबै पैं जब अपनौ इलाज करायौ तब रोग से छुटकारौ पायौ।

राजरानी अब रोजई सकारे त्रिफला कैं जल सैं आँखिन कूँ धोबै। जासैं आँखिन की जोत बढ़ गयी। ऐनकऊ नांय लगानी परी। पत्र-पत्रिकान कैं महीन सैं महीन आखर पढ़ि सकै। गैलऊ मैं इकली निकसिबे मैं डरै नांय। लोग साँचई कहतु हैं:—

"आँखि हैं तौ जहान है।"
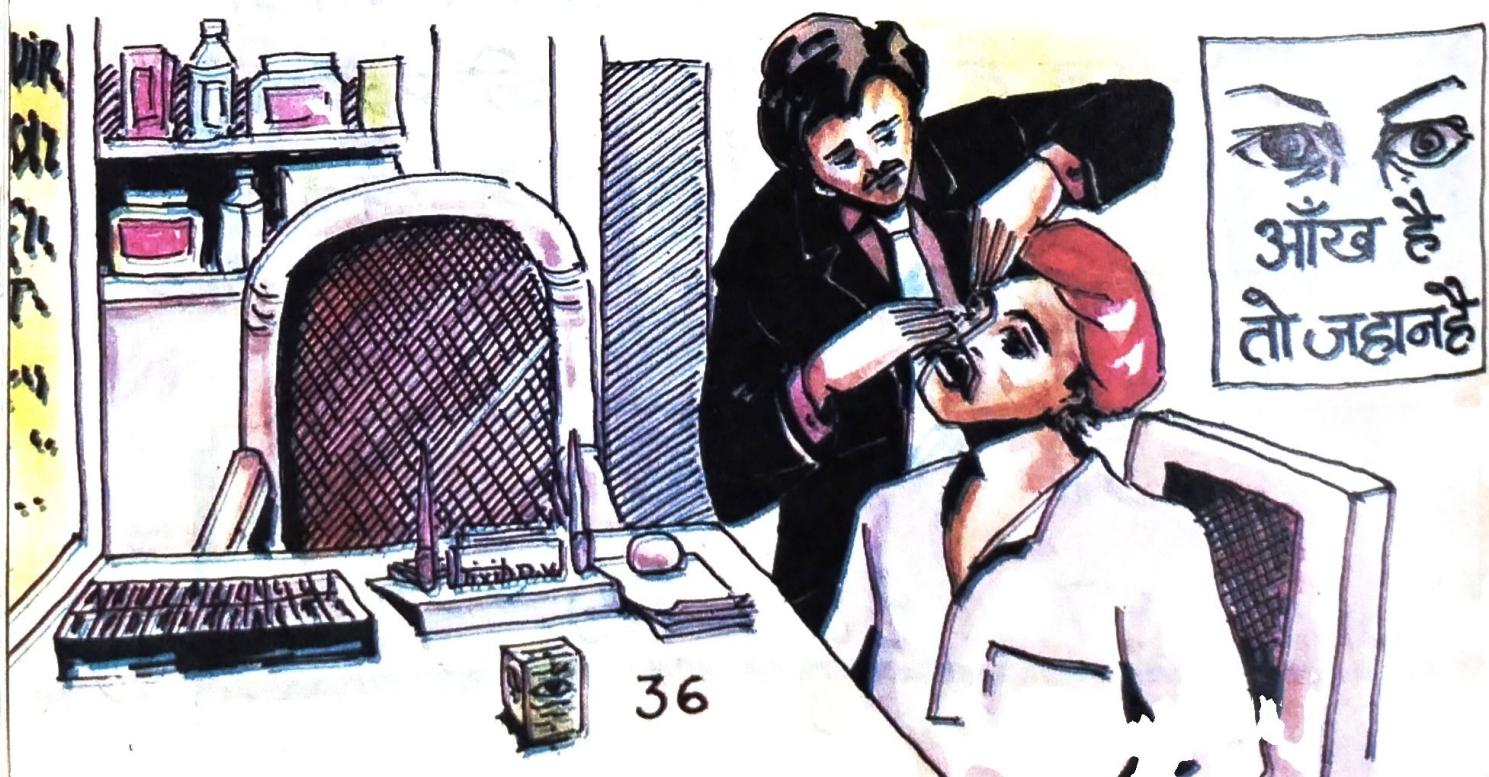
परभाती

उठौरी सुहागिल नारि, बुहारू लेऊ अंगनाँ।
धीउ मेरी सास कें, बहू मेरी बाप कें,
कौन बुहारैं मेरौ बासौ घर अंगनाँ।1।
बहू ऐ बुलाइ लेउ, धीअ ऐ रहन देउ,
बुही बुहारैं तिहारौ बासौ घर अंगनाँ।2।
दीए की लोइ फीकी, चाँदनी कौ चँदना,
मुखकौ तमोल फीकौ, नैनन कौ सुरमा।3।
गौअँन कै बंधन छूटे, पंछी चले चुगनाँ,
उठौरी सुहागिल नारि, हम चले जमुना।4।

– संकलनकर्ता – डा. त्रिलोकीनाथ व्रजबाल

पाठ 16
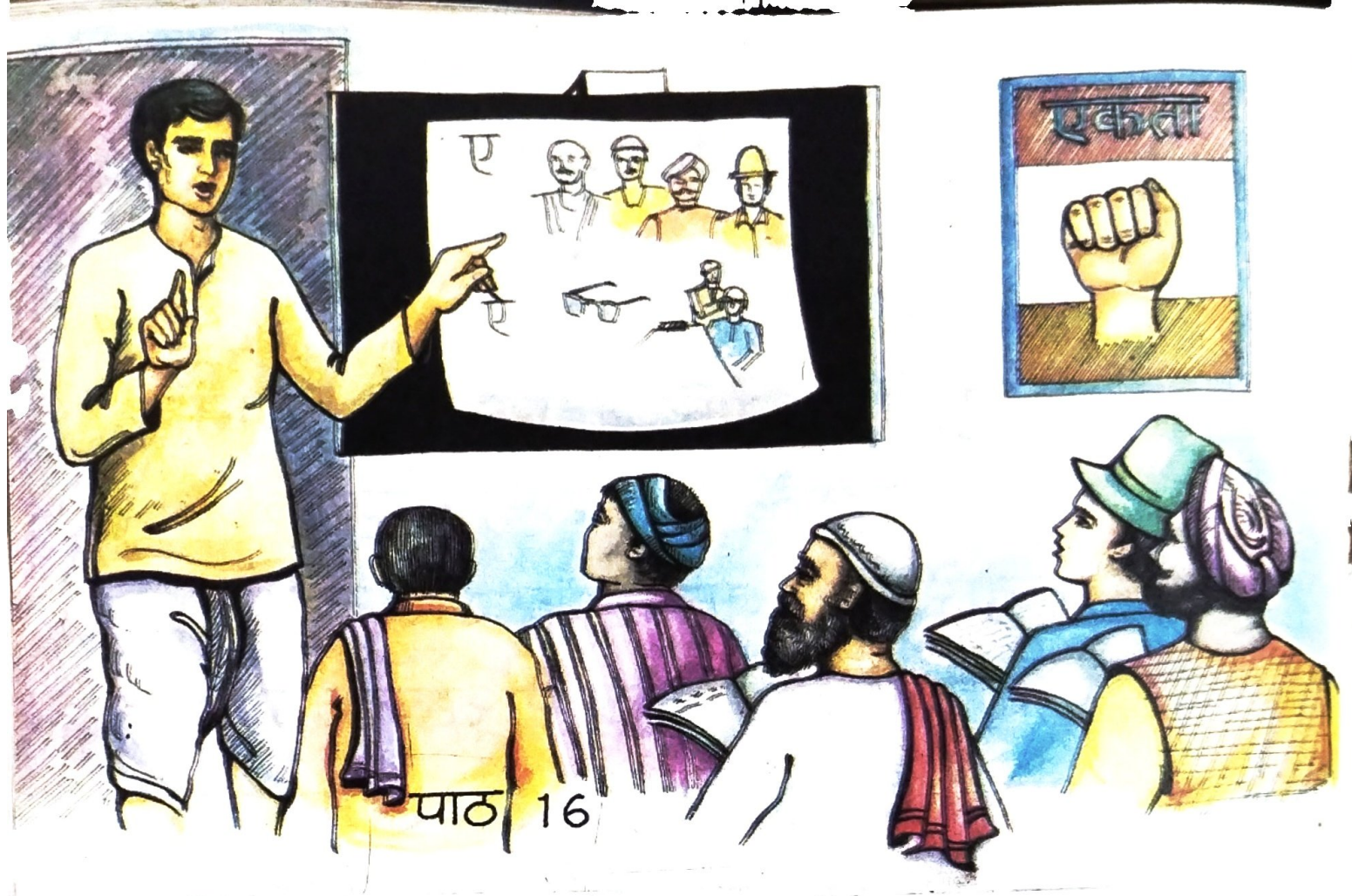
कक्षा ज्ञान एकता

क्ष ज्ञ ए

क्ष	क्षमा	क्षेत्र	शिक्षा	साक्षर
	कक्षा	पक्ष	शिक्षक	अक्षर
ज्ञ	ज्ञान	अज्ञान	विज्ञान	विज्ञापन
ए	एक	एकड़	अतएव	पढ़िए

भिक्षुक लक्षण यज्ञ लिखिए संज्ञा
क्षत्रिय ज्ञानी रक्षक चाहिए अक्षाँस
अज्ञेय नए नए पक्ष विपक्ष मोक्ष
अनविज्ञ आइए अक्षत एतबार संक्षेप
भिक्षा ज्ञाता याज्ञिक इसलिए

समाज कौ पहरुआ

शिक्षा के क्षेत्र मैं शिक्षक के बिना कोई काम नांय चलै। शिक्षकई शिक्षक की धुरी होतु है। शिक्षकई निरक्षर कूँ साक्षर बनावतु है। बुई अनपढ़ कूँ

71	72	73	74	75
76	77	78	79	80

पढ़ावतु है, ज्ञान देतु है।

शिक्षा केवल अक्षरज्ञान करनौई नांय। बुतौ जीवन कौ अंग होति है। आदमी के जनम सैं लै कैं जीवन कै अंतिम क्षण तक शिक्षा चलति रहति है।

शिक्षकसमाज कौ सजग पहरुआ है। बुई बतावतु है कि अशिक्षा तौ लोगनि कूँ तोड़ति है, पर शिक्षा सबनि कूँ जोड़ति है। बुई सबनि में एकता लावति है। शिक्षक कैं सामनोसमाज को हितु ही सबसे ऊँचौ होतु है। जहि कारन शिक्षक कौ सब आदर करैं।

ब्रज आश्रम वृंदावन गोवर्धन

्र श्र ृ र्
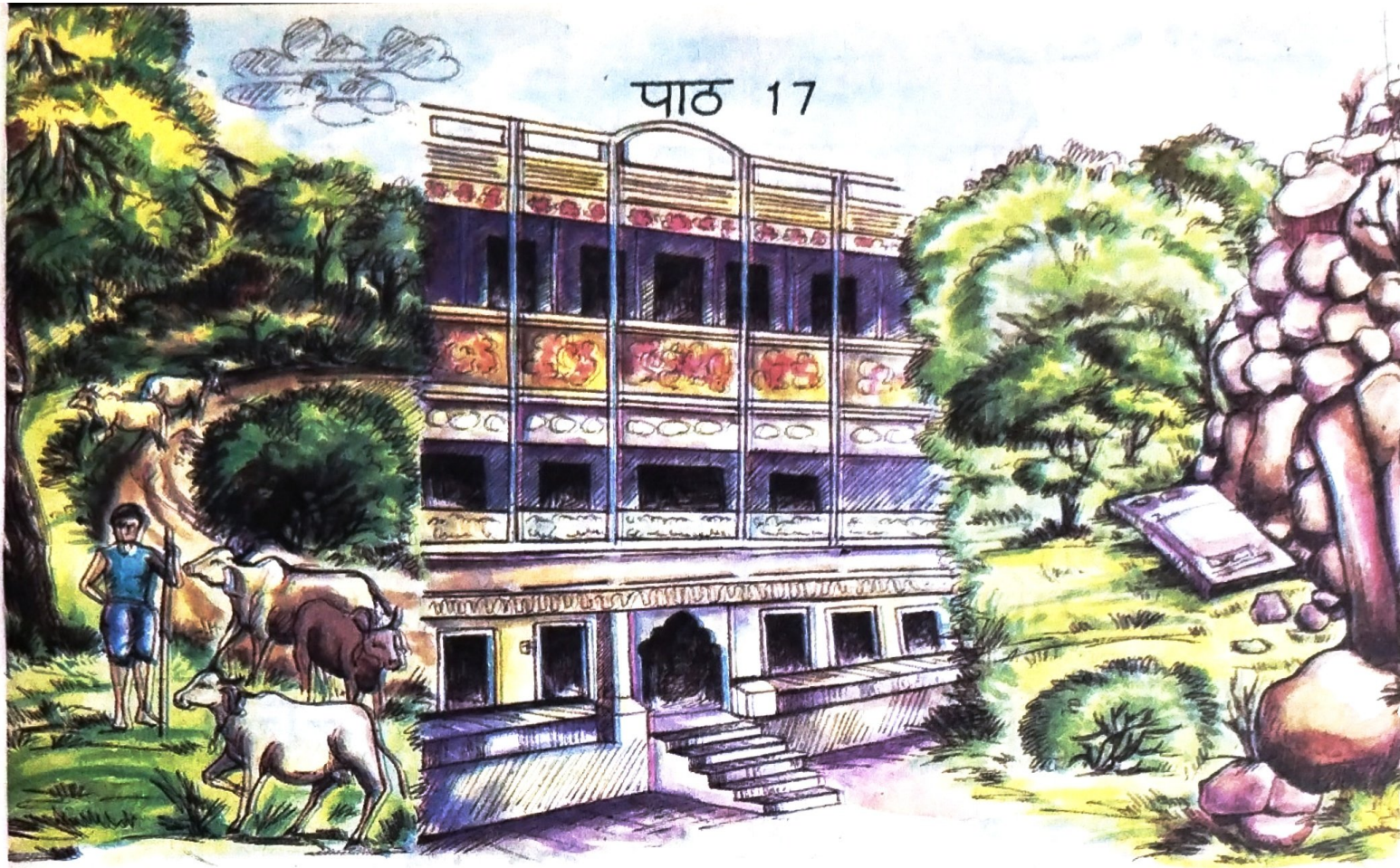
्र	प्रण	प्राण	प्रेम	प्रीति
श्र	श्रम	श्रीमान	आश्रम	विश्राम
ृ	कृपा	बृषभानु	कृषक	प्रकृति
र्	धर्म	दर्पन	बर्तन	कुर्सी

प्रेरणा	द्रोपदी	ब्रजवासी	सुग्रीव	क्रीड़ा
चक्र	श्रीमान	हृदय	तीर्थ	श्रमिक
ग्रह	सक्रिय	कृषि	अमृत	प्रकाश
ग्रहिणी	समर्पण	सूर्य	परिश्रम	मृग
प्रसाद	प्रथिवी	पर्वत	सर्वत्र	श्रवण
पार्वती	श्रीजी	तृण	दुर्लभ	चर्चा
दुर्गा	दृढ़	नृप	प्रमोद	

लागौ वृंदावन नीको

ब्रज मंडल मथुरा के आस-पास चौरासी कोस में फैलौ है। ब्रजवासी सरल हृदय और प्रेमी होय हैं। वे धर्म-

81	82	83	84	85
86	87	88	89	90
91	92	93	94	95
96	97	98	99	100

कर्म सो प्रीति करैं। बृषभानु नंदिनी के चरण कमलन सों प्रेम करें।

ब्रज कौ एक तीर्थ गोवर्धन-पर्वत हूँ विशेष है। गोवर्धन, प्रभु कौ साक्षात् रूप ही मानो जाय। हर पूरनमासी कौं याकी सात कोस की परिक्रमा लगाई जाय। मुणिया पूर्णिमा कूँ या परिक्रमा करिबे वारे प्रेमी जन जि गीत गामें:- "मै गोवर्धन कूँ जाऊँ मेरे बीर,
नाय माने मेरौ मनुआ।"

वृंदावन तौ तुलसी कौ बन हतो, सो याकौ नाम वृंदावन पड़ि गयो। नंदलाल-गोपाल की लीलान के कारण याकि महिमा बढ़ि गयी। आज तौ वृंदावन ब्रज को सबतें बड़ौ तीर्थ बनि गयो है। याही लिऐ लोग गावें-
"आली मोहे लागै वृंदावन नीको।"

पाठ 18

संयुक्ताक्षर

(पाई हटाकर बनने वाले)

ख	ख्याल तख्त	ग	ग्वाला सुग्गा
च	अच्छा बच्चा	ज	ज्वार सज्जन
त	पत्ता सत्य	प	छप्पर प्याला
ल	गल्ला मुल्क	श	श्याम श्वेत
ष	कृष्ण मनुष्य	स	स्कूल बस्ता

ब्रज महिमा

कृष्ण श्याम मनुष्य ग्वाल

रसखान कृष्ण के उपासक थे। अपने श्याम की रूप-छबि पर वे रीझ उठे थे। वे उनकी लीला-स्थली ब्रज भूमि से बड़ा प्यार करते थे। उनकी यही इच्छा

थी कि जब भी वे जनम लें तब ब्रज भूमि में ही रहें। ग्वाल बाल और गोपियों का ख्याल आते ही वे विभोर हो जाया करते थे। ब्रज के कुंज, फल, फूल-पत्ते सभी उनके मन में प्रेम का भाव जगाया करते थे। ब्रज के कण-कण में उनका मन रम गया था। उनकी एक कविता उदाहरण के रूप में नीचे दी जा रही है—

मानुष हौं तौ वही रसखान,

बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।

जो पशु हौं तौ कहा बसु मेरौ,

चरौंनित नंद की धेनु मझारन॥

पाहन हौं तौ वही गिरि कौ,

जो धर्यौ कर छत्रपुरंदर कारन।

जो खग हौं तौ बसेरौ करौ,

नित कालिंदी कूलकदंब की डारन॥

यदि मैं मनुष्य के रूप में जनम लूँ तो ब्रज के गोकुल गाँव में ग्वालों के बीच मेरा निवास हो। यदि मुझे पशु रूप में जनम लेना पड़े तो मेरी इच्छा है कि मैं नंद बाबा की गायों के बीच रहा करूँ। यदि मुझे पत्थर बनकर संसार में आना पड़े तो मैं उस गोबर्धन पर्वत का पत्थर बनूँ जिसे कृष्ण ने ब्रज की रक्षा के लिए अपनी उँगली पर उठा लिया था। यदि मैं पक्षी के रूप में जनम लूँ तो मैं चाहता हूँ कि यमुना के तट पर कदंब की डाल पर ही मेरा निवास हो।

संयुक्ताक्षर

(पाई हटाकर बनने वाले)

न्	नन्दनन्दन धन्य	ध्	ध्यान ध्वज
भ्	सभ्य अभ्यास	थ्	पथ्य स्वास्थ्य
म्	कदम्ब आरम्भ	घ्	अर्घ्य विघ्न
व्	व्यायाम व्यवहार	ब्	सब्जी ब्यालू

स्वस्थ तन, स्वस्थ मन

ललिता : भैया गोपाल ! अपने स्वास्थ्य पर भी ध्यान दिया करो। पढ़ने-लिखने के साथ ही खेलना और व्यायाम करना भी आवश्यक माना गया है।

गोपाल : हाँ दीदी ! व्यायाम का महत्त्व तो है ही। पड़ोस के नन्दू और कन्हैया भी नित्य व्यायाम करते हैं।

ललिता : अच्छा गोपाल! तुम्हारी पुस्तक में स्वास्थ्य से सम्बन्धित कोई पाठ है या नहीं?

गोपाल : स्वास्थ्य पर एक पाठ है। उसमें लिखा गया है कि स्वस्थ तन में ही स्वस्थ मन रहता है।

ललिता : यह तो ध्यान देने वाली बात है। व्यायाम का अभ्यास किया करो। दूध पिया करो। हरी सब्जियाँ खाया करो। कृष्ण की तरह बलवान बनो और ज्ञानी बनो।
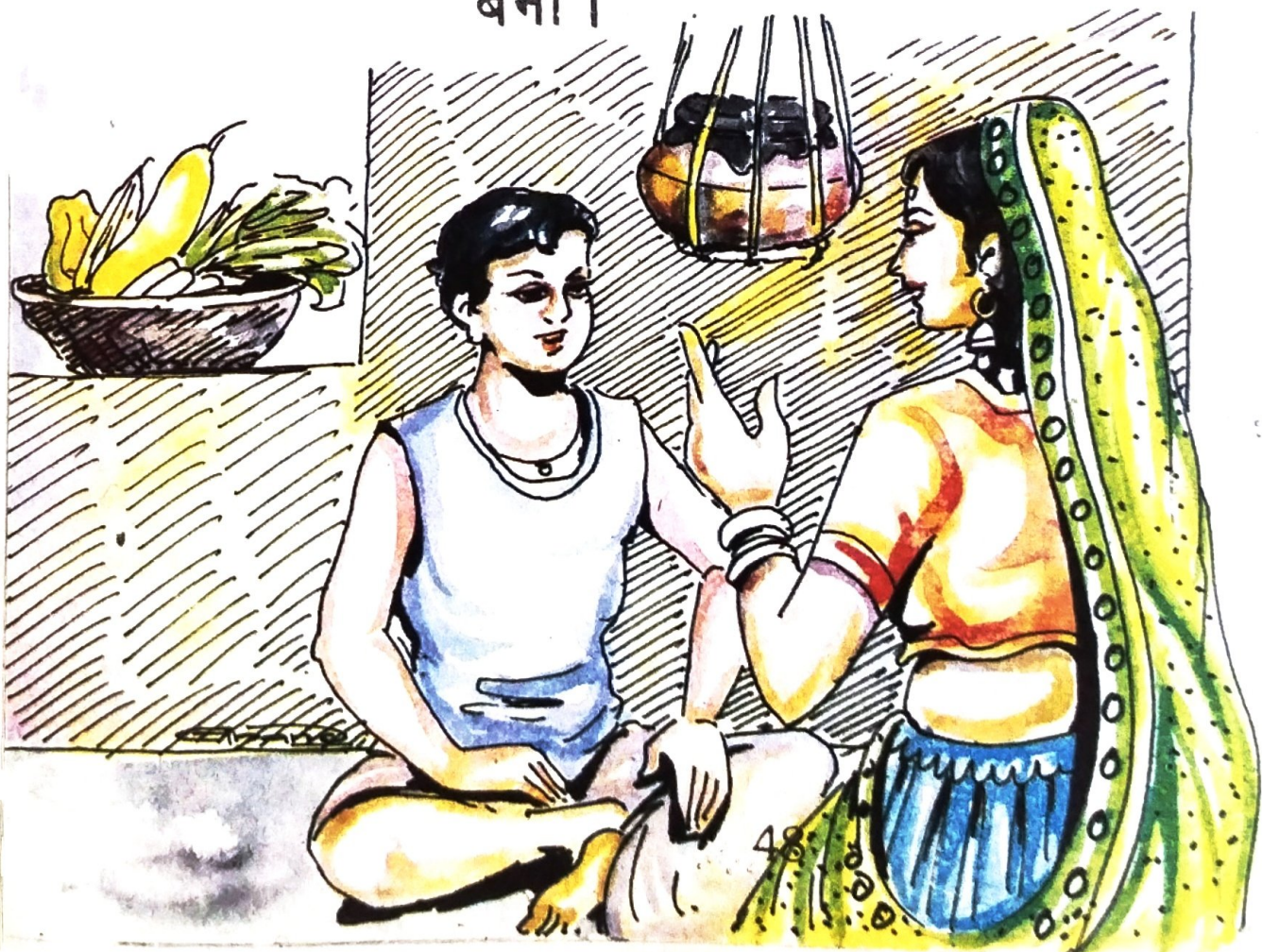
गोपाल : स्वस्थ तन व स्वस्थ मन के साथ ही अच्छा व्यवहार भी जीवन के लिए उपयोगी माना गया है।

ललिता : हाँ, यह तो लाख टके की बात है। व्यवहार और आचरण का ध्यान रखना बहुत जरूरी है। संतुलित भोजन, व्यायाम और अच्छा आचरण अच्छे स्वास्थ्य की कुंजी है। स्वस्थ तन और स्वस्थ मन वाला मनुष्य सभी कठिनाइयों पर विजय पा लेता है।

गोपाल : ठीक है दीदी! मैं स्वास्थ्य पर पूरा ध्यान दूँगा।

पाठ 20

संयुक्ताक्षर

(घुंडी हटाकर बनने वाले)

क	क्यारी क्वार क्वारी मक्खन मक्का
	चक्की रिक्शा शक्ति भक्त डाक्टर
फ	मुफ्त दफ्तर रफ्तार हफ्ता
	फ्लू मुजफ्फर नगर

समझदार सुक्खा

राम उजागर के पास काफी धन था। फिर भी धन की भूख नहीं मिटी थी। अधिक से अधिक धन कमाने के चक्कर में रहता था।

एक दिन एक साधु उसके घर आया। उसने कहा— मैं देवी का भक्त हूँ। अगर देवी का चमत्कार देखना चाहो तो दिखाऊँ। राम उजागर बोला—

दिखाओ बाबा! साधु ने उससे थोड़ा मक्खन लाने को कहा। राम उजागर ने मक्खन उसके सामने रख दिया। साधु ने मक्खन को छू दिया। ऐसा करते ही उसके हाथ में एक फूल आ गया। यह चमत्कार देखकर राम उजागर की आँखें फटी की फटी रह गयीं। वह साधु के पैरों पर गिर पड़ा।

साधु ने राम उजागर से कहा— बच्चा! तुम चाहो तो मैं तुम्हारा धन भी दूना कर सकता हूँ। लोभी राम उजागर लालच में आ गया। धन दूना कराने के लोभ में उसने अपना धन साधु को दे दिया। वह साधु साधु नहीं, ठग था। उसने राम उजागर को बातों में भुलाए रखा और मौका पाकर धन लेकर चम्पत हो गया। गाँव वालों ने राम उजागर की बड़ी खिल्ली उड़ायी।

राम उजागर के पड़ोस में ही सुक्खा रहता था। वह नये विचारों का था। उसने राम उजागर को समझाया–देखो राम उजागर किसी पर विश्वास करना अच्छा है। लेकिन अंधविश्वास बहुत बुरा है। अपने

गाँव के तमाम लोग अन्धविश्वास में जकड़े हैं। मैं हमेशा सबको समझाता हूँ। दो हफ्ते पहले गफ्फार के लड़के को बुखार आया। वह मस्जिद में फूँक डलवाने गया। बच्चे को तो निमोनिया था, वह और बढ़ गया। डाक्टर आया, तब ठीक हुआ।

इसी तरह झक्कू की माँ को फ्लू हुआ। वह भी ओझा से झाड़-फूँक कराने गया। जब बुढ़िया मरने-मरने को थी, तब डाक्टर बुलाया। तुम्हें भी तो मैंने कई बार समझाया है।

'हाँ भैया!' राम उजागर धीरे से बोला– मैं पहले तुम्हारी बात मानता, तो इस तरह न लुटता।

पाठ 21

संयुक्ताक्षर

(हलन्त ् लगाकर बनने वाले)

ट्	मिट्टी चट्टान चट्टी चिट्ठी मट्ठा
	मट्ठी सिलबट्टा लट्ठ मिट्ठन छुट्टी
ठ्	पाठ्य पुस्तक हँसी ठठ्ठा
ड्	अड्डा खड्ढ ड्योढ़ी कबड्डी बुड्ढा
द्	द्वार द्वापर द्वारिका द्वारिकाधीश विद्या
	विद्यालय विद्वान उद्योग उद्घाटन दद्दा
ह्	चिह्न जिह्वा ब्रह्म कह्यौं गह्यौं

(आधा द् और आधा ह् इस प्रकार भी लिखा जाता है।)

द् + य =	विद्या विद्यालय गद्य पद्य
द् + व =	द्वार द्वारिकाधीश द्वापर
द् + ध =	वृद्ध समृद्धि सिद्धि
ह् + न =	चिह्न अपराह्न
ह् + म =	ब्रह्म ब्राह्मण

बलराम की चिट्ठी

किशनपुर
26-8-88

आदरणीय चाचा जी,

प्रणाम !

बहुत दिनों से आपका पत्र नहीं आया। हम लोग भी चिट्ठी नहीं लिख सके। आशा है आप, चाची जी और मेरे भाई-बहनें कुशल पूर्वक होंगे।

चाचा जी, कई वर्षों से आप गाँव भी नहीं आये। जिस समय आप शहर में काम करने गये थे तब से अपने किशनपुर में बहुत अंतर आ गया है। अब यह पुराना पिछड़ा हुआ गाँव नहीं रहा।

आपको स्मरण होगा कि हमारे यहाँ पीने के पानी का बड़ा कष्ट था। हम लोग इसके लिए ब्लाक के अधिकारियों से मिले। अब गाँव में कई हैंड पम्प लग गए हैं। पानी की बड़ी सुविधा हो गयी है।

गाँव की गलियाँ कितनी ऊबड़-खाबड़ थीं। जगह-जगह गड्ढे थे। ग्राम सभा के जो नए प्रधान चुने

गए, वे बड़े उत्साही हैं। उनके प्रयत्न से सब गलियों में खड़ंजे बिछ गए हैं। अब बरसात में कीचड़ नहीं होता। गर्मियों में धूल भी उतनी नहीं उड़ती।

एक और बड़ा काम हुआ है। आप तो जानते ही हैं कि ईंधन का कितना कष्ट था। गोबर जलाना पड़ता था और खेतों के लिए खाद कम पड़ जाती थी। गाँव वालों ने मिलकर गोबर गैस यन्त्र लगाने का निश्चय किया। सरकार की भी इसमें सहायता मिली। यह यन्त्र चालू हो गया है। अब हर घर में इसी गैस से भोजन बनता है, रोशनी होती है। गैस के तीन-चार हंडे गलियों के मोड़ों पर भी लगा दिए गए हैं।

पहले प्राथमिक विद्यालय का भवन कच्चा था। वह अब पक्का बन गया है। वहाँ अब रात को प्रौढ़ों की पाठशाला भी चलती है।

अब हम लोग गाँव में लड़कियों के लिए भी एक विद्यालय खुलवाने की कोशिश कर रहे हैं। आशा है, जल्दी ही यह काम हो जायेगा।

चाचा जी, मेरी प्रार्थना है कि आप कुछ दिन की

छुट्टी लेकर एक बार अपने गाँव अवश्य आइए। साथ में चाची और विद्या बहन को भी लाइए।

चाची जी को प्रणाम और छोटे भाई-बहनों को प्यार!

सादर,

आपका
बलराम

पाठ 22

(ट, ड के साथ र का संयोग)

ट्र – राष्ट्र ट्रैक्टर ट्रेन कंट्रोल ट्रक ट्राली पेट्रोल

ड्र – ड्रामा ड्रिल ड्रम ड्रेस

हमारे राष्ट्रीय प्रतीक

हर देश की अपनी पहचान होती है। इस पहचान के कुछ चिह्न होते हैं। ये चिह्न हैं – राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रगान और राष्ट्रीय प्रतीक।

राष्ट्रध्वज

तिरंगा हमारे देश का राष्ट्रीय ध्वज है। इसमें तीन रंग हैं। ऊपर केसरिया, बीच में सफेद और नीचे

हरा रंग होता है। सफेद पट्टी के बीचोबीच नीले रंग का चक्र होता है। इस चक्र में चौबीस तीलियाँ होती हैं। केसरिया रंग त्याग और साहस का, सफेद रंग शांति और सच्चाई का और हरा रंग मातृभूमि की सम्पन्नता का प्रतीक है। बीच का चक्र हमें आगे बढ़ते रहने का संदेश देता है। राष्ट्रीय पर्वों पर कोई भी नागरिक इसे अपने मकान पर फहरा सकता है। फहराते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि झण्डा डंडे के ऊपरी सिरे से जुड़ा रहे। सूर्यास्त से पहले राष्ट्रीय झण्डा उतार लिया जाता है। राष्ट्रीय झण्डे को हम पूरा सम्मान देते हैं।

हमारा राष्ट्रगान और राष्ट्रीय गीत

'जन गण मन' हमारा राष्ट्रगान है। इसे कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ टैगोर ने लिखा था। राष्ट्रीय समारोहों के प्रारम्भ और अन्त में राष्ट्रीय गान गाया जाता है। इसे गाते समय सावधान मुद्रा में खड़े होना चाहिए।

'वन्दे मातरम्' को भी राष्ट्रगीत का दर्जा दिया गया है। इसकी रचना श्री बंकिमचन्द्र चटर्जी ने की थी।

हमारा राज चिह्न

भारत का राज चिह्न अशोक-स्तम्भ से ली गई शेर की त्रिमूर्ति है। स्तम्भ में चार शेर हैं पर चित्र में तीन ही दिखाई देते हैं। इस त्रिमूर्ति के नीचे घोड़े और बैल का चित्र है। इनके बीच में चक्र है। चक्र के

नीचे लिखा है, 'सत्यमेव जयते' अर्थात् 'सत्य की ही विजय होती है।'

हमारा राष्ट्रीय पशु
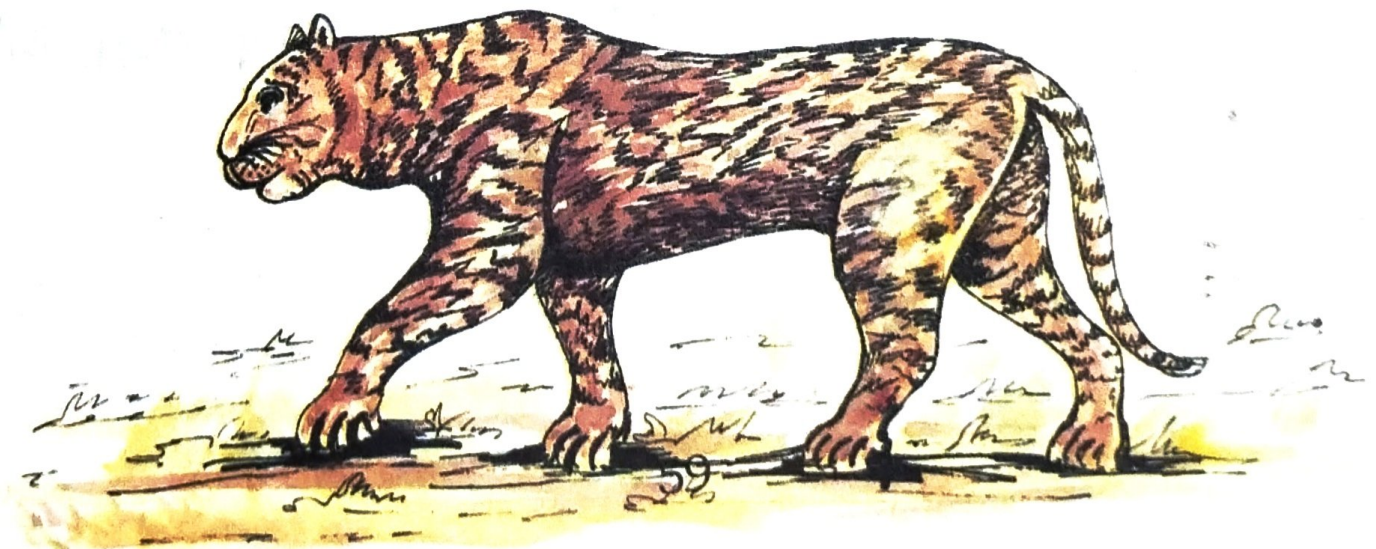
बाघ भारत का राष्ट्रीय पशु है। बाघ का सजीला स्वस्थ शरीर, उसकी चुस्ती-फुर्ती, उसकी शाही चाल, उसकी दहाड़ आदि शौर्य और ओज के प्रतीक हैं। भारत में बाघ का शिकार पूर्णरूप से वर्जित है।

हमारा राष्ट्रीय पक्षी

हमारा राष्ट्रीय पक्षी मोर है। मोर प्राचीन काल से हमारी संस्कृति से जुड़ा है। इस राष्ट्रीय पक्षी को मारना कानूनन जुर्म है।

ऐसौ देसु हमारौ

ऐसौ देसु हमारौ भारत,
ऐसौ देसु हमारौ।
जामें गंगा-जमुना-कृष्णा-
कावेरी लहरावें।
जाको तीन ओर तें सागर,
की लहरें नहलावें।
चमकि रह्यो जाके माथे पै,
मुकुट हिमालय प्यारौ।1॥
राम-लखन-शत्रुघ्न-भरत से,
जामें जनमें भैया।
जामें जनमी सीता-राधा,
जनमें कृष्ण-कन्हैया।
जिनने धरती मैया कौ सब,
हँसि-हँसि भार उतार्‌यौ।2॥
भारत अपनौ ऐसी बगिया,
जामें अनगिन क्यारी।
पर जाकी क्यारी-क्यारी है,
याकी सोभा सारी।
जानें समझ्यौ जगतु एकु है,
कोऊ न न्यारौ-न्यारौ।3॥

– द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी
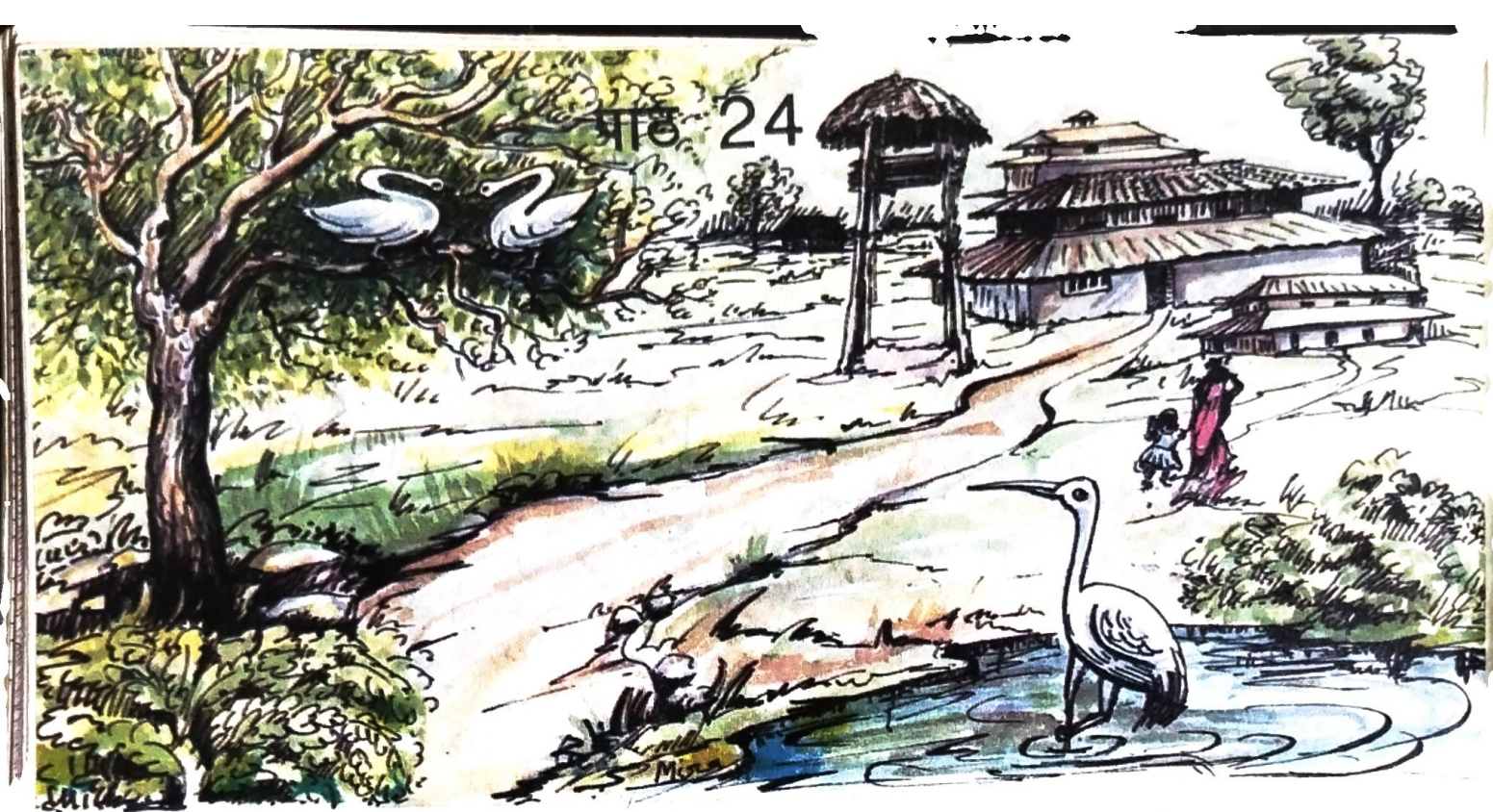
न्याब की बात

एक गाम मैं एक बरगद कौ पेड़ हतो। ब्वापै एकु बगुला भोतु दिनन से रहूयौ करतौ। एकु दिना एकु हंस औरु एकु हंसिनी कहूँ ते उड़िकै बा गाम मैं आये। बिननें बाराति कूँ ब्वाई बरगद पै रैनि बसेरौ करूयौ। गाम मैं बड़ौ सून-सपाटौ हतो। सून-सपाटौ देखिकै हंसिनी ने हंस सै पूछी– "नोंजी, कहा बात ऐ। गाम मैं बड़ौ सून-सपाटौ ऐ?"

हंस-हंसिनी की जि बातचीत एक बगुला सुनि रहूयो हतो। ब्वाने याको भोतु बुरौ मान्यौ। सोची जा

कलंक कूँ मिटानौ चैये। सो सकारे होतई जबु हंस-हंसिनी उड़िबै लगे तब बगुला ने हंस कूँ रोकि लियौ औरु कही– "चौंरे हंस! मेरी बोहोटियाय कहाँ ले जाय रह्यौ ऐ!"

हंस चौंकि पर्‌यौ! बोलौ– "जि बगुली नांय भैया, जि तौ हंसिनी ऐ।"

बगुला बोलौ– "बारे लपका। पराई ऐ अपनी कहि रह्यौ ऐ। जा बात ऐ तौ जि पूरौ गाम जानैं।"

हंस ने कही– "अच्छौ भैया! झगरैमतिना गाम के पंचन सै न्याब कराइलै।"

बगुला हंस की बात पै राजी है गयौ। बगुला ने इट्ट-उट्ट पंचायत जोरि लीन्हीं औरु पंचन सै बोलौ– "भैया पंचौ! हौं तिहारे गाम मैं बरसन सै रहि रह्यौ ऊँ। तुम सब धरम-ईमान सै कहियौं कै ई बोहोटिया जा हंस की ऐ जा मेरी ऐ?"

पंचन ने देखी बगुला निसट झूँठ बोल रह्यौ ऐ, पर जि सोचिकै कि, बगुला गाम कौ ऐ औरु हंस

परायो ऐ। यालए सबु मिलि विचारि कै बोले– "बगुला तू साँची कहै, जि बोहोटिया तौ तेरी ऐ। जि हंस तौ बड़ौ नीचु ऐ।"

हंस ने कही– "पंच महाराज! न्याब की बात करौ। नेंकु हंसिनी सै तौ पूँछि लैऔ।"

पंच बोले– "अरे, हमै का समुझावै, बगुला की बात साँची ऐ। जा चुपचाप गाम सै निघसि जा, नांय तौ तेरी हड्डी-पसुँरि सबु एक कर दिंगे।"
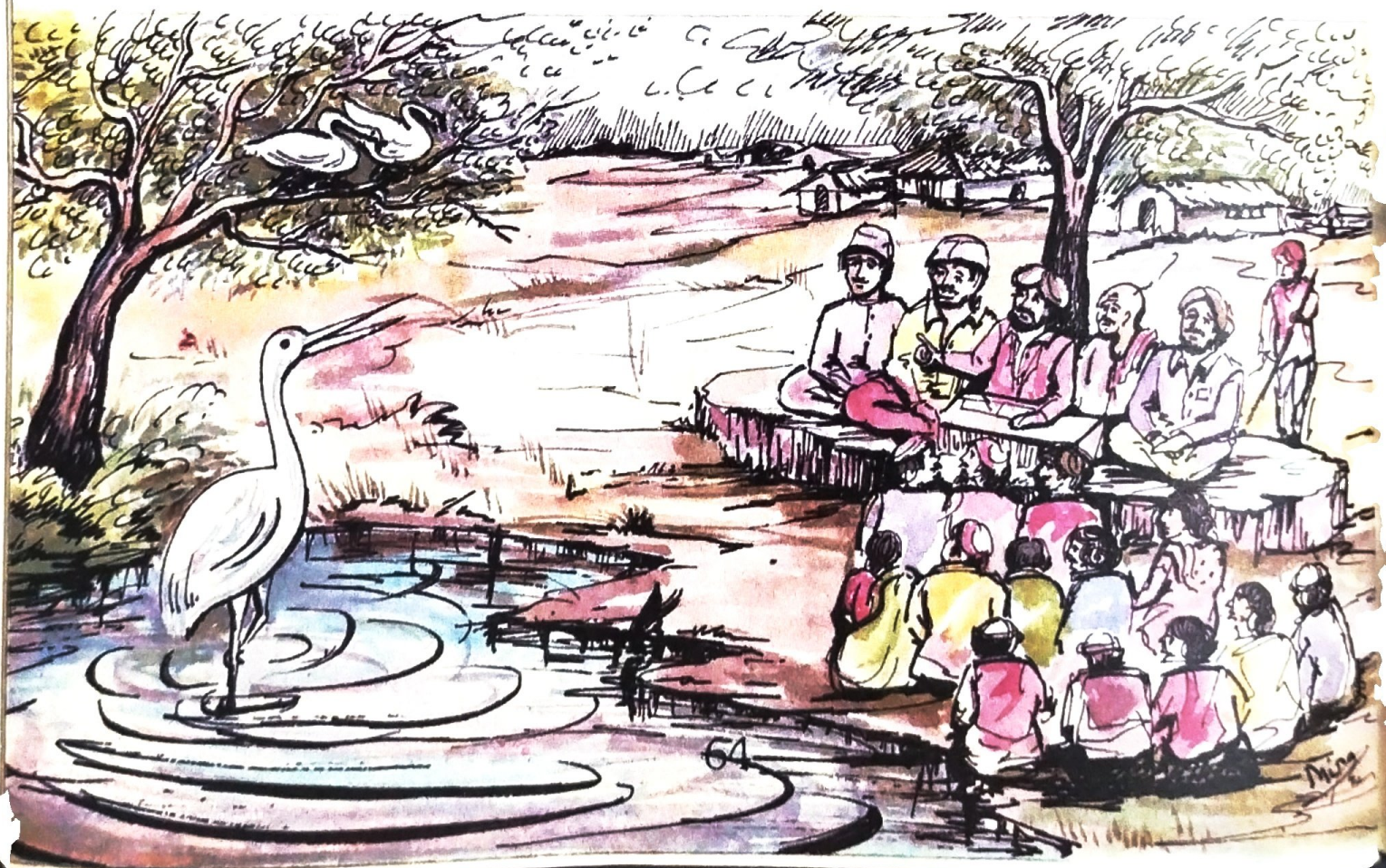
हंस घबड़ाय गयौ! व्वानें हंसिनी कूँ देखौ। हंसिनी पछार खाइकै राइबै लगी। जिदेखि कै बगुला हंस सै बोलौ– "हंस! साँची कह जि गाम चों उजरौ ऐ?" जि सुनतै इ हंस कूँ राति की बात याद आय गयी। बोलौ– "भैया! मोसै भूल भई। तैरौ खोट नांय। जा गाम मै न्याब नांय, व्वामें ऐसौ ई सून-सपाटौ होइगौ।

बगुला नें कही– "हंस! बोहोटिया तेरी ऐ, तूई संग लै जा।"

जि बात सुनितैई पंचन के मोंह उतर गये और हंस अपनी हंसिनीऐ लैकै गाम सै उड़ि गयौ।
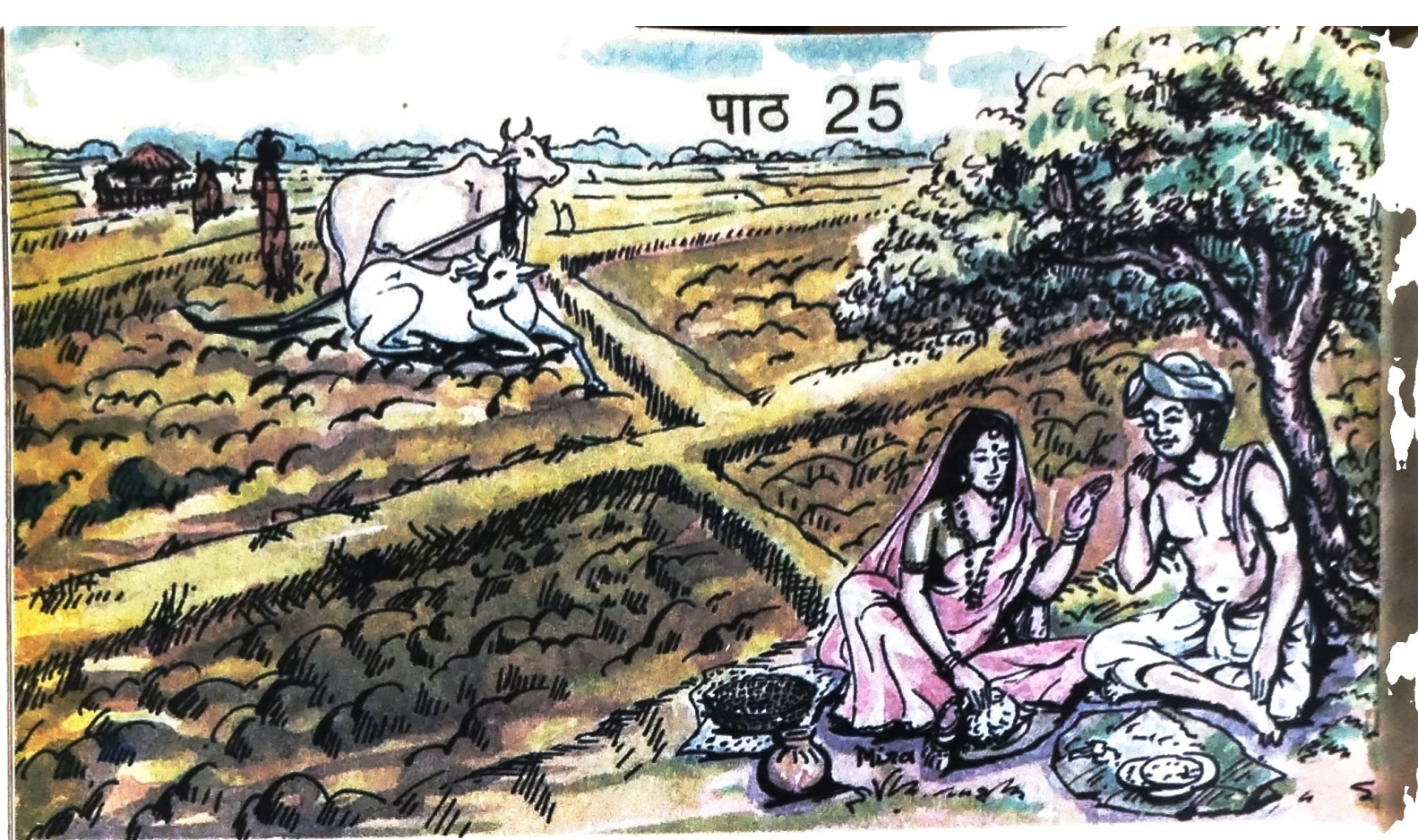
रथ के दो पहिए

(दृश्य—एक)

(खेत का एक दृश्य। सुशीला और रामकरन खेत की मेड़ पर बैठे हुए हैं। सुशीला रामकरन को भोजन करा रही है।)

सुशीला— हल से खेत कब तक जोतते रहोगे? कुछ पैसे हों तो सरकारी ऋण लेकर एक ट्रैक्टर ले लो।

रामकरन— ट्रैक्टर लेने की चाह तो मेरे मन में भी

है। पर पैसे कहाँ बचते हैं? अभी तो मुन्नी और बाबू की पढ़ाई पर ध्यान देना है। बाद में देखूँगा।

सुशीला— मुन्नी ने दसवीं तक पढ़ तो लिया है। अब उसे पढ़ाने की क्या जरूरत है? हाँ, बाबू की पढ़ाई जरूरी है।

रामकरन— अरी पगली! अब समय बदल चुका है। अब तो लड़के और लड़की में कोई भेद नहीं रह गया है। दोनों की पढ़ाई एक सी हो और वे जीवन का रास्ता स्वयं चुनें, यही ठीक है।

सुशीला— तुम्हारी यही बात तो मेरे पल्ले नहीं पड़ती है। अरे, औरत तो औरत ही रहेगी। उसे वही चूल्हा-चक्की करनी है। उसे अधिक पढ़ाना बेकार है।

रामकरन— नहीं सुशीला! ऐसा सोचना ठीक नहीं। स्त्री-पुरुष सदा से ही एक-दूसरे का सहयोग करते रहे हैं। गृहस्थी का बोझ दोनों मिलकर ही उठाते हैं। याद है न!

एक बार तुमने फसल कटने पर बोझ स्वयं उठाना चाहा था और मैं उसे उठाकर घर ले जाना चाहता था।

सुशीला— लेकिन, तुमने उठाने कहाँ दिया था, खुद ही उठाकर घर ले गए थे।

रामकरन— पर तुमने उस बोझ में हाथ लगाया था न, तभी तो मैं उसे अपने सिर पर उठा पाया था।

सुशीला— (मुस्कुराकर) हाँ, यह तो ठीक है, पर स्त्री को दबना तो पड़ता ही है।

रामकरन— अब ऐसा कुछ भी नहीं है। जब मेरी मुन्नी पढ़-लिखकर आगे आएगी, तब देखोगी।

सुशीला— हाँ देखूँगी! लेकिन अभी तो मुझे घर जाने की जल्दी है। बच्चे स्कूल से आ गए होंगे।

रामकरन— हाँ-हाँ जाओ! मैं भी काम करूँ।

(सुशीला का प्रस्थान। पर्दा गिरता है।)

दृश्य—दो

(सुशीला रसोई पका रही है। कुछ दूर पर पड़ोस की अमीरन बुआ बैठी हुई हैं। दोनों में बातें हो रही हैं।)

अमीरन— बहू! मुन्नी और बाबू अब क्या कर रहे हैं?

सुशीला— बुआ! मुन्नी शहर में अपने चाचा-चाची के साथ रहकर पढ़ाई कर रही है। एम० ए० की पढ़ाई का आखिरी साल है। अब आगे की राम जानें। बाबू ने डाक्टरी पढ़ ली है। अब वह

डाक्टर हो जाएगा।

(सुशीला के चेहरे से गर्व चमक उठता है।

अमीरन— बड़े भाग्य हैं तुम्हारे बहू! मेरी रजिया को तो उसके अब्बा ने पढ़ने नहीं दिया। वह बेचारी बहुत चाहती थी कि उसे भी पढ़ाया जाय, पर क्या करूँ।

सुशीला— बुआ! मैं भी मुन्नी को पढ़ाना नहीं चाहती थी, पर मुन्नी के बाबू जी ने उसे पढ़ाने का हौंसला रखा। अब मुझे भी अच्छा लगता है। मेरी मुन्नी भी अब कुछ करने लायक हो जाएगी।

(रामकरन का प्रवेश)

रामकरन— बुआ सलाम! बुआ बड़े मौके से आई हो। लो मिठाई खाओ। सुशीला, तुम भी मुँह मीठा करो।

अमीरन— बड़े खुश दीख रहे हो रामकरन।

रामकरन— हाँ बुआ! आप सबके आशीर्वाद से

मेहनत सफल हुई। मुन्नी ने एम० ए० की परीक्षा पास कर ली है। उसे अच्छे नम्बर मिले हैं। वह दो-चार दिनों में अपने चाचा के साथ आ जाएगी। वह गाँव में बच्चों को पढ़ाएगी, ऐसा उसने लिखा है।

अमीरन— चलो भैया, अब मेरे घर की बच्चियाँ भी पढ़ लेंगी। रजिया के अब्बा को भी अब समझ आ गयी है। वे भी अब कहते रहते हैं कि बच्चे-बच्ची सब समान हैं। अच्छा, चलूँ बेटा! अब तो उठते-बैठते भी नहीं बनता।

(रामकरन अमीरन को सहारा देकर उठाता है। दोनों बाहर की ओर जाते दिखाई पड़ते हैं। पर्दा गिरता है।)

दृश्य—तीन

(गाँव की एक पाठशाला का दृश्य। कक्षा 8 में गाँव
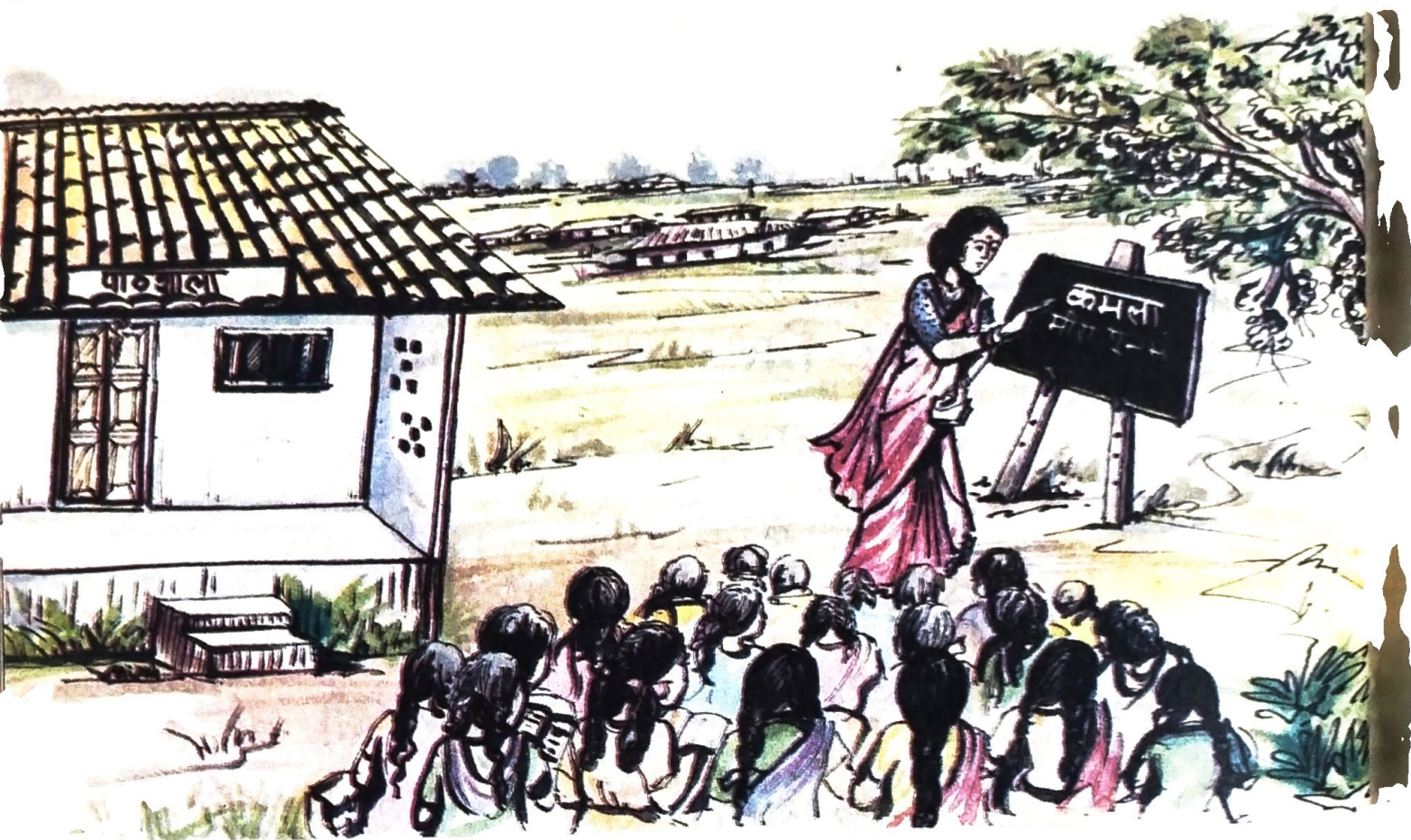
की बालिकाएँ बैठी हुई हैं। अध्यापिका मुन्नी का प्रवेश। सभी बालिकाएँ अपनी जगह खड़ी हो जाती हैं। मुन्नी उन्हें बैठने का निर्देश देती है। कक्षा में पढ़ाई आरम्भ हो जाती है।)

मुन्नी— हाँ, तो कल तुम लोगों ने रानी लक्ष्मी बाई के बारे में पढ़ा था। उनकी वीरता और देश भक्ति के बारे में तुम्हें बताया गया था। शकीला! क्या ऐसी किसी महिला का नाम तुम बता सकती हो, जो देश-विदेश में प्रसिद्ध रही हो?

शकीला— हाँ, देश की प्रधानमन्त्री स्वर्गीय इंदिरा गाँधी ऐसी ही महिला थीं।

मुन्नी— ठीक है शकीला! तुमने सही उत्तर दिया है। इसके अलावा कई नारियों ने बड़े-बड़े काम किए हैं। अब महिलाएँ इंजीनियर, डाक्टर, प्रोफेसर आदि पदों पर काम करती हुई पुरुषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर हर क्षेत्र में काम कर रही हैं।

शकीला— दीदी! जब सब लोग नौकरी में ही लग जाएँगे, तो घर का काम कौन देखेगा।

मुन्नी— शकीला, पढ़-लिखकर नौकरी ही की जाय, यह जरूरी नहीं है। घर की आवश्यकता को देखकर पति-पत्नी जैसा चाहें, करें। यदि दोनों नौकरी करते हैं, तो दोनों मिलकर घर का काम-काज भी देख लेंगे।

लल्ली— ऐसा हो जाय तो बड़ा अच्छा हो। अकेले बेचारी औरत को घर का बोझ

उठाना पड़ता है, यह तो ठीक नहीं है।

मुन्नी— स्त्री-पुरुष रथ के पहिए की तरह हैं। दोनों समान हैं। हमें कभी अपने को कमजोर नहीं समझना चाहिए। पढ़-लिखकर अपने परिवार, समाज और देश की सेवा में हमें अपना योगदान देना चाहिए।

शकीला— दीदी! आज तो आपने बड़ी अच्छी-अच्छी बातें बतायीं।

मुन्नी— हाँ शकीला! देश के महान स्त्री-पुरुषों की जीवनी से बड़ी शिक्षा मिलती है। कल तुम लोगों को ऐसी ही एक जीवनी पढ़ाऊँगी।

(घंटा बजता है। सब चल पड़ते हैं। पर्दा गिरता है।)

गोपाल का गोपालन

गऊ और गोपाल ब्रज भूमि से ऐसे जुड़े हुए हैं, जैसे सूरज और धूप, चंदा और चाँदनी। इनके बिना ब्रज के बारे में सोचा भी नहीं जा सकता।

गोपाल तो खुद गौएँ पालते थे। ग्वाल बालों के साथ गौएँ चराने जाते थे। वे हर गाय को उसके नाम से पुकारते थे। ओ श्यामा, ओ धौरी, ओ गौरी आदि-आदि और गौएँ भी उनके नाम लेते ही हुंकारती हुई

उनकी टेर के पीछे दौड़ी चली आती थीं। गोपाल की बंशी का स्वर भी उनके लिए जादू का काम करता था।

आखिर क्यों? इसलिए कि श्रीकृष्ण यानी गोपाल गौओं के महत्त्व को समझते थे। वे जानते थे कि भारत गाँवों में बसता है। यहाँ के ज्यादातर लोग खेती-किसानी का काम करते हैं। पशुपालन का काम करते हैं और पशुपालन में गोपालन मुख्य है।

खेती-किसानी के लिए ही नहीं, स्वास्थ्य के लिए भी वे भोजन में दूध-दही व मक्खन की महत्ता को समझते थे, इसलिए वे गाँवों से दूध-दही को बाहर नहीं जाने देते थे। आगर गूजरियाँ ले भी जातीं तो वे रास्ता रोक कर मना करते। नहीं मानतीं तो उनकी मटकियाँ फोड़ देते।

दरअसल गाय का दूध स्वास्थ्य के लिए बड़ा गुणकारी है। बच्चों के लिए माँ का दूध तो उत्तम होता ही है। उसके बाद गाय का दूध ही गुणकारी माना जाता है।

आज अपने देश में हम फिर गोपाल के इस गोपालन के महत्त्व को समझने लगे हैं और अब तो गोपालन एक मुख्य धंधा ही बन गया है। अब हम नये-नये आधुनिक तरीकों से इस धंधे को करने लगे हैं। अच्छी नस्ल की गाएँ पाली जाने लगी हैं, वे बहुत अधिक दूध देती हैं। गोपालन हमारी आमदनी का भी एक बहुत बढ़िया जरिया बन गया है।

गोपाल की गोपालन की यह देन ब्रज के लिए ही नहीं, सारे भारत के लिए वरदान है।

पाठ 27

इन्हें दूषित न होने दें

जीवन के लिए साफ हवा-पानी दोनों बहुत जरूरी हैं। किन्तु इन्हीं दोनों पर आज सबसे बड़ा संकट छा रहा है। पहले ऐसी बात नहीं थी। देश में साफ हवा-पानी की कमी न थी। नदियों का जल साफ-सुथरा था। हवा में ताजगी थी। लेकिन आज न

पीने को साफ पानी मिलता है, न साँस लेने को स्वच्छ हवा।

यह समझने की बात है कि ऐसा क्यों हो गया। यह खराबी अपने-आप नहीं आई। पानी को ही लीजिए। हमें पानी या तो नदियों से मिलता है, या कुओं से। नदी जहाँ से निकलती है, वहाँ उसके पानी में किसी तरह की गंदगी नहीं होती। लेकिन ज्यों-ज्यों वह आगे बढ़ती है, उसमें गंदगी बढ़ती जाती है।

शहरों का मल-मूत्र गंगा-यमुना जैसी पवित्र नदियों में डाल दिया जाता है। बड़े-बड़े कारखानों का जहरीला कचरा भी इन्हीं में बहा दिया जाता है। गाँवों में मरे हुए जानवर नदी में बहा दिए जाते हैं। कहीं-कहीं तो अधजले मुर्दे भी नदियों में बहते नजर आते हैं। आप सोचिए कि इस तरह का गंदा पानी पीने से मनुष्य और पशुओं के जीवन पर कितना बुरा असर पड़ता होगा।

यमुना को ही लीजिए। कितनी पवित्र नदी। कितना निर्मल जल। लेकिन आज इसकी हालत किसी

से छिपी नहीं है। आपने यह भी देखा होगा कि लोग कुओं की जगत पर कपड़े धोते और नहाते हैं। इससे गंदे पानी के छींटे कुएँ में जाते हैं और उसके पानी को भी गंदा कर देते हैं।

यह तो रही पानी की बात। जिस हवा में हम साँस लेते हैं, वह भी साफ नहीं रह गयी है। बड़े-बड़े कारखानों की चिमनियों का धुआँ, रेलगाड़ी, बस, ट्रक, मोटर और ट्रैक्टर आदि के इंजन का धुआँ और घर के चूल्हों का धुआँ, ये सब के सब हवा को दूषित कर देते हैं। पहले जब घने वन थे। चारों ओर पेड़ों की हरियाली थी। हवा की गंदगी पेड़ों के कारण साफ हो जाती थी। हमने पेड़ काट डाले और हवा का साफ होना रुक गया। किसी समय का हरा-भरा वृन्दावन आज इसी कारण सूखा नजर आता है। नतीजा यह है कि हवा दूषित हो रही है। साँस के रोग बढ़ रहे हैं।

बहुत ज्यादा शोरगुल भी हमारे लिए मुसीबत पैदा कर रहा है। बसों और मोटरों के हार्न, लाउड-

स्पीकर, ऊँची आवाज में बजने वाले रेडियो और टी० वी० आदि हमें बहरा बना दे रहे हैं। हमारे कान एक सीमा तक ही आवाज बर्दाश्त कर सकते हैं, उससे अधिक नहीं।

जानकार लोगों का कहना है कि अगर यही हालत रही तो दुनिया में हमारा जीवन कठिन हो जायेगा, इसलिए यह बहुत जरूरी हो गया है कि हम समय रहते चेत जायँ— न पानी गंदा होने दें, न हवा दूषित होने दें और न शोरगुल बढ़ने दें।

राजा महेन्द्र प्रताप

सन् 1909 की बात है। वृन्दावन में हिंडाले का पर्व मनाया जा रहा था। इसी समय कुछ लोगों को एक निमन्त्रण-पत्र मिला। पत्र एक राजा की ओर से था। उसमें लिखा था– हरियाली तीजि के दिन मेरे पुत्र का नामकरण संस्कार होगा। इस शुभ अवसर पर आप पधारने की कृपा करें।

ठीक समय पर राजा साहब के सम्बन्धी पहुँचे। कोई सोने के जेवर लाया था, कोई कीमती कपड़े। आने वालों में पंडित मदन मोहन मालवीय भी थे।

लोग बड़ी उत्सुक्ता से नामकरण समारोह की प्रतीक्षा करने लगे। लेकिन वहाँ न तो पुरोहित का पता था, न किसी तरह के समारोह की चहल-पहल।

थोड़ी देर में राजा साहब खड़े हुए। उन्होंने अतिथियों की ओर देखकर कहा– "आज मेरे सबसे प्यारे पुत्र का नामकरण है। वह पुत्र है– प्रेम महाविद्यालय। यह भारत में अपने ढंग की पहली शिक्षा-संस्था है। मैं अपनी संपत्ति का एक बड़ा हिस्सा लगाकर इसका आरम्भ कर रहा हूँ। आप सब इसे आशीर्वाद दीजिए। यह महाविद्यालय छात्रों में त्याग और देश भक्ति की भावना पैदा करेगा। साथ ही यहाँ उन्हें ऐसे हुनर सिखाए जाएँगे, जिससे वे स्वयं अपनी रोजी कमा सकें।"

यह सुनते ही पहले तो लोग भौंचक्के रह गए। फिर सबने राजा साहब के त्याग और सूझ-बूझ की प्रशंसा की।

ये राजा थे– प्रसिद्ध देशभक्त और त्यागी राजा महेन्द्र प्रताप। एक बार किसी ने उनसे पूछा– "राजा साहब, आपने अपनी जागीर क्यों ठुकरा दी?" उनका उत्तर था– "मेरे पुरखों ने सिर झुकाकर इसे प्राप्त किया था, मैंने सिर उठाकर इसे ठुकरा दिया।"

राजा महेन्द्र प्रताप का जन्म 1 दिसम्बर, 1886 ई० को हुआ था। 28 वर्ष की उम्र में अपनी धन-सम्पत्ति और परिवार को छोड़कर वे देश की आजादी के लिए अलख जगाने निकल पड़े। उन्होंने अनेक देशों की यात्रा की। वहाँ भारतीय क्राँतिकारियों का संगठन किया। वे जापान में नेता जी सुभाष चन्द्र बोस से भी मिले। अपनी जवानी के 32 वर्ष उन्होंने देश की स्वतन्त्रता के लिए कष्ट सहते हुए विदेशों में बिता दिये।

राजा साहब 1946 में भारत लौट सके। उसके बाद अपने जीवन के अन्तिम क्षण– 19 अप्रैल, 1978 तक वे राष्ट्रीय-एकता के लिए प्रयत्न करते रहे।

राजा महेन्द्र प्रताप सिंह ब्रज के गौरव थे।
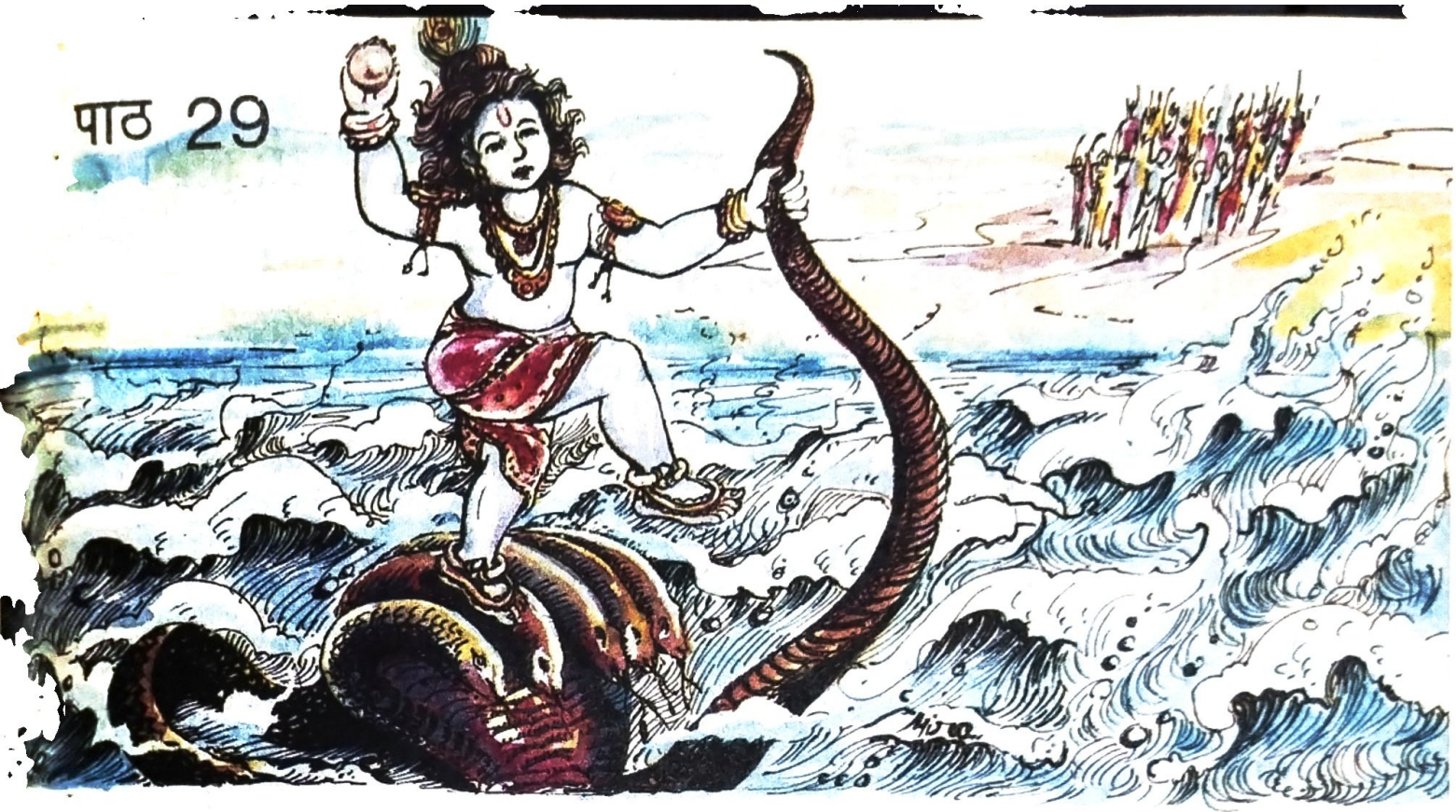
श्रीकृष्ण

ब्रज भूमि श्रीकृष्ण की लीला भूमि है। श्रीकृष्ण वसुदेव और देवकी के पुत्र थे। उनके जन्म की भी एक कहानी है। उनकी माँ देवकी मथुरा के राजा कंस की बहन थी। कंस बड़ा अत्याचारी था। उसने नारद मुनि से सुना था कि देवकी का पुत्र ही उसका वध करेगा, इसलिए कंस ने वसुदेव और देवकी को कारागार में डाल दिया। श्रीकृष्ण का जन्म कारागार में ही हुआ।

कंस के भय से वसुदेव ने चुपचाप श्रीकृष्ण को यमुना पार गोकुल में अपने मित्र नन्द के यहाँ पहुँचा दिया। नन्द और उनकी पत्नी यशोदा ने श्रीकृष्ण का पालन-पोषण किया। कुछ दिनों बाद श्रीकृष्ण के जन्म की बात कंस को मालूम हो गई। उसने उन्हें मरवाने के लिए तरह-तरह के उपाय किए। लेकिन उसे सफलता नहीं मिली। उसने श्रीकृष्ण को मरवाने के लिए जिस-जिस को भेजा, वह जीवित नहीं लौटा।

श्रीकृष्ण नन्द और यशोदा के बड़े दुलारे थे। वे गोप-गोपियों के बड़े प्यारे थे। वे उनके साथ गौयें चराते, बंशी बजाते और तरह-तरह के खेल खेलते थे। उनकी इन बाल-लीलाओं का वर्णन सूरदास आदि अनेक व्यक्तियों ने किया है।

श्रीकृष्ण जब कुछ बड़े हुए, उस समय तक कंस के अत्याचार बहुत बढ़ चुके थे। इससे ब्रज के लोग बड़े भयभीत और दुखी थे। श्रीकृष्ण ने कंस का वध करके ब्रजवासियों को इन अत्याचारों से मुक्ति दिलाई। इससे वे सारे ब्रजवासियों के मन में बस गये।

कंस के वध से मगध का राजा जरासंध बहुत कुपित हुआ। वह कंस का ससुर था। उसने मथुरा पर बार-बार चढ़ाई की, पर उसे हर बार मुँह की खानी पड़ी। इन आक्रमणों से ब्रजवासियों को बड़ा कष्ट झेलना पड़ रहा था, इसलिए श्रीकृष्ण ने मथुरा से दूर समुद्र के किनारे द्वारका नगरी बसाई। वहाँ जाकर मथुरा के निवासी सुख-चैन से रहने लगे। द्वारका बसाने के कारण ही श्रीकृष्ण द्वारकाधीश कहलाए।

श्रीकृष्ण के समय में ही पांडवों और कौरवों के बीच घमासान युद्ध हुआ। इस युद्ध का वर्णन 'महाभारत' नामक ग्रन्थ में किया गया है। श्रीकृष्ण ने इस युद्ध में पांडवों का साथ दिया, क्योंकि पांडवों का पक्ष न्याय का पक्ष था। इस युद्ध में कौरव नष्ट हो गए और पांडव विजयी हुए।

इसी युद्ध के समय की बात है। लड़ाई के मैदान में भीष्म पितामह, गुरु द्रोणाचार्य और अन्य सगे-सम्बन्धियों को देखकर अर्जुन के मन में मोह उत्पन्न हो गया। उसने सोचा, इन्हें मारकर अगर राज मिल

भी गया तो उससे क्या लाभ। उसने युद्ध करने से इनकार कर दिया। श्रीकृष्ण ने उसे समझाया कि तुम्हारा पक्ष न्याय का है। जो लोग तुम्हारे सामने हैं, वे अन्याय पर हैं। न्याय के लिए युद्ध करना तुम्हारा धर्म है। श्रीकृष्ण के समझाने से अर्जुन का मोह भंग हो गया। श्रीकृष्ण के इस उपदेश का वर्णन 'गीता' नाम के प्रसिद्ध ग्रन्थ में है। 'गीता' की महिमा सारे संसार में प्रसिद्ध है।

श्रीकृष्ण गोप-गोपियों के प्रिय सखा थे। अन्याय और अत्याचार के विरोधी थे। वे असाधारण योद्धा थे और महान योगी। उनके इन्हीं गुणों और अलौकिक चरित्र के कारण उन्हें अवतारी पुरुष कहा गया है।

राष्ट्र गान

जन गण मन अधिनायक जय हे,
भारत भाग्य विधाता।
पंजाब सिन्ध गुजरात मराठा
द्राविड़ उत्कल बंग।
विन्ध्य हिमाचल यमुना गंगा
उच्छल जलधि तरंग।
तब शुभ नामे ज़ागे,
तब शुभ आशिष मागे।
गाहे तव जय गाथा।
जन गण मंगल दायक जय हे,
भारत भाग्य विधाता।
जय हे जय हे जय हे
जय जय जय जय हे।।